लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

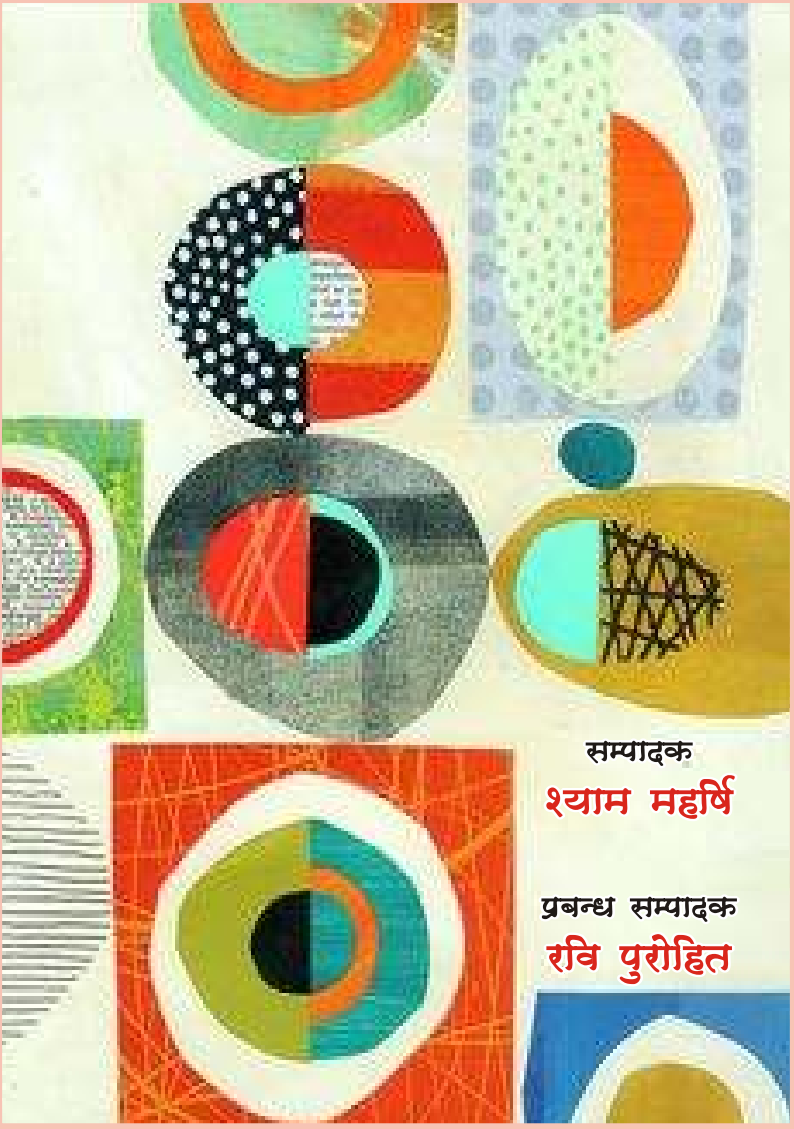

सम्पादक
श्याम महर्षि

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

जनवरी–मार्च, 2021

बरस : 44 अंक : 2 पूर्णांक : 150

संपादक
श्याम महर्षि

प्रबंध संपादक
रवि पुरोहित

प्रकाशक
मरुभूमि शोध संस्थान
राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803
www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com
ravipurohit4u@gmail.com

आवरण
ज्योत्स्ना राजपुरोहित

रेखाचित्राम
रोहित प्रसाद पथिक

ग्राहक शुल्क

पांच साल : 500 रिपिया, आजीवण : 1500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

रुजगार री भासा बणणी चाईजै राजस्थानी — *श्याम महर्षि* — 3

कहाणी

फगत अेक सवाल — *भरत ओळा* — 5

हेरणी — *पूर्ण शर्मा 'पूरण'* — 14

लघुकथा

भलो मिनख / भाजी कोनी, हारगी कल्लो — *अमीर अहमद सुमन* — 19

व्यंग्य

झपिया म्हाराज — *संजय पुरोहित* — 21

ललित निबंध

लोक रै आलोक मांय लोककथावां — *डॉ. मंगत बादल* — 24

कविता

परमाणु रै पळकां बिच्चै — *डॉ. आईदानसिंह भाटी* — 29

दो प्रेम कवितावां — *ओम नागर* — 31

टिब्बा म्हारो माण / म्हारा सुपना / हियै रो हेत
हेत / जिंदगाणी — *सुनील गज्जाणी* — 33

हिवड़ो है अधीर / म्हारी क्यारी-सखी प्यारी
कविता री चाह / मोरपांख में रमी राधा — *सीमा राठौड़ 'शैलजा'* — 35

बाल-कविता

तूं थारै घर जाव करोना / बीरा लेवण बेगो आई
आव बेलिया पेच लड़ावां — *डॉ. शारदा कृष्ण* — 37

हाइकू

दस हाइकू — *दीनदयाल शर्मा* — 39

गीत

सुरंगो राजस्थान / असर अस्यो अंग्रेजां आळो — *प्रहलाद कुमावत 'चंचल'* — 40

संस्मरण

केसर री क्यारी मांय बादळां सूं बतळावण — *डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम'* — 42

नानीसा — *मनोहर सिंह राठौड़* — 46

कूंत

'नेव निवाळी' सूं पड़तो नारी मन री पीड़ रो परनाळो — *डॉ. फतेहसिंह भाटी* — 54

संपादकीय

रुजगार री भासा बणणी चाईजै राजस्थानी

घणै हरख री बात है कै नूंवी राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2021) में प्राथमिक स्तर री शिक्षा विद्यार्थी नैं उणरी मातृभासा में देवण रो प्रावधान करीज्यो है। अबै देखणो औ है कै राजस्थान मांय नई शिक्षा नीति रै इण प्रावधान नै किण भांत लागू करयो जावैला। हालांकै राज्य सरकार री राजस्थान शिक्षा परिषद् बरस 2021 री सरुआत मांय ई इण बात रा संकेत देय दिया है कै राजस्थान री सरकारी स्कूलां मांय राजस्थानी पोथ्यां विद्यार्थियां रै पढण सारू उपलब्ध कराईजैला। परिषद् सगळा सरकारी विद्यालयां रै पुस्तकालयां मांय क्षेत्रीय भाषा राजस्थानी री पोथ्यां री खरीद सारू 13 जनवरी, 2021 नैं इण बाबत अेक विज्ञप्ति जारी करी है, जिणमें प्रकाशकां सूं राजस्थानी पोथ्यां री खरीद सारू नमूना प्रतियां मांगीजी ही।

भारतीय संविधान मांय ई औ अधिकार दिरीज्यो है कै राज्य सरकार चावै तो विद्यार्थियां नै प्राथमिक स्तर री शिक्षा उण प्रदेस री क्षेत्रीय भासा मांय दी जाय सकै, भलांई वा भासा संविधान री आठवीं अनुसूची मांय जुड़्योड़ी हुवो कै मत हुवो। हां, प्रदेस रो बहुसंख्यक वरग उण भासा नै बोलण-समझण वाळो हुवणो चाईजै। इण हिसाब सूं राजस्थानी रै प्राथमिक शिक्षा में प्रवेश मांय कोई बाधा नीं है।

इणरै सागै-सागै राजस्थान री प्रतियोगी परीक्षावां मांय भी प्रश्न-पत्र रो कीं हिस्सो राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति सारू तय करीजणो चाईजै, जिणसूं कै प्रदेस रा प्रतियोगियां नैं बेसी सूं बेसी रुजगार मिल सकै। कीं बरसां पैली आर.अे.अेस. अर दूजी प्रतियोगी परीक्षावां मांय इण भांत रो प्रयोग करीज्यो भी हो, जिणरा सकारात्मक परिणाम साम्हीं आया अर प्रदेस रा केई युवा प्रशासनिक अधिकारी बणण मांय कामयाब हुया हा। प्रशासनिक अधिकारी री ई क्यूं, लिपिक, अध्यापक आद री सगळी छोटी-मोटी प्रतियोगी परीक्षावां मांय राजस्थानी भासा, साहित्य अर संस्कृति सूं संबंधित सवाल सामल करीजणा चाईजै। राजस्थान रै टाळ हरेक प्रदेस री प्रतियोगी परीक्षावां मांय इण भांत री व्यवस्था है, जिणसूं घणकरा प्रतियोगी उण प्रदेस रा ईज चयनित हुवै।

किणी पण प्रदेस री भासा रै रुजगार सूं जुड़्यां ई उण भासा अर प्रदेस रो चौफेरी विगसाव संभव है। आसा है आगलै शिक्षा सत्र सूं राजस्थानी भासा रो विसय प्राथमिक स्तर री शिक्षा में सामल करण रै सागै प्रतियोगी परीक्षावां मांय भी राजस्थानी भासा अर अठै री कला-संस्कृति नैं पूरी तवज्जो दिरीजसी। जै राजस्थान, जै राजस्थानी।

—श्याम महर्षि

ISSN : 2320-0995

फार्म नं. 4, नियम-8

पत्रिका रो नांव	:	राजस्थली
प्रकाशन री ठौड़	:	श्रीडूंगरगढ़
प्रकाशन री अवधि	:	तिमाही
मुद्रक	:	महर्षि प्रिंटर्स, श्रीडूंगरगढ़
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
प्रकाशक	:	महावीर माली
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
संपादक	:	श्याम महर्षि
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
ठिकाणो	:	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
उणां शेयर होल्डरां रा नांव अर ठिकाणा, जिणा कनै कुल पूंजी रा 10% सूं बत्ता शेयर है:		कोई कोनी

म्हैं महावीर माली घोसित करूं कै ऊपरलो विवरण म्हारी जाणकारी अर विस्वास रै मुजब सत्य अर वास्तविकता माथै आधारित है।

महावीर माली
प्रकाशक

ISSN : 2320-0995

भरत ओळा

फगत अेक सवाल

बियां तो जेठारामजी सत्तर पार करग्या हा, पण आजकाल सत्तर बरस कित्ताक हुवै। इत्ता उंतावळा तो दर ई जावता को लागै हा नीं। सेहत-पाणी ठीक ही। बजां सिर रो काम-धंधो ई करता। बीमार-सीमार कोई हा कोनी। खांसी-जुखाम तो होवतो ई रैवै। खांसी-जुखाम अर थोड़ी भोत ताप-सिरवा सूं कुण मर्‌यो सुण्यो ? पण जुखाम रै पांचवैं दिन ई जेठारामजी रा तो मोरिया बोलग्या। दो-तीन दिन तो घरै ई दवाई-पाणी ली, पण जद पार कोनी पड़ती दिसी तो अस्पताळ कानी भाज्या। डॉक्टरां नैं कोरोना रो बैम हो, इण वास्तै भरती करतां ई कोरोना रो सैम्पल लेयनै आथण ई बीकानेर भेज दियो, पण सैंपल री रिपोर्ट आवै उण सूं पैली ई जेठारामजी तो बूचकी मनायग्या। अब कांई कर्‌यो जावै ? जिला अस्पताळ अधीक्षक रै तो माला मंडग्या। जे घरवाळा नैं जेठाराम जी री ल्हास सूंप देवै अर रजा-कजा रिपोर्ट पॉजिटिव आय जावै तो ? गांव-कस्बां वाळा पत्रकारां नैं थे जाणो ई हो, बाल री खाल काढै। औ सुख महानगर रै मोटै पत्रकारां रो। इसी छोटी-मोटी बातां पर ध्यान ई कोनी देवै। बियां वां लाइयां रो ई कसूर कोनी। वां नै इत्ती वैल कठै कै वै जेठाराम जेड़ै अलियै-छलियै माथै खबर बणावै ? औ कोई प्रधानमंत्री थोड़ो ई है जिको इण रै लारै-लारै कैमरो चक्यां फिरै। आं बापड़ां नैं तो आजकाल बिड़द बखाणण अर लपोसा लगावण सूं ई फुरसत कोनी। फेर न तो औ सुशांत राजपूत है, न भारत-पाकिस्तान, न मंदिर-मस्जिद तो न जम्मू-कश्मीर। छेकड़ हो तो जेठियो टांडी ई। पण फेर ई जेठाराम री मौत पत्रकारां सारू खबर बणगी। कारण कै जेठारामजी री मौत

ठिकाणो :
37, सेक्टर 5
नोहर (हनुमानगढ़)
राजस्थान 335523
मो. 9414503130

महानगर मांय नीं, राजस्थान रै उत्तराधै सिंवाड़ै रै अेक छोटै-सै स्हैर हनुमानगढ़ मांय हुयी ही। औ दिल्ली का मुंबई तो है कोन। अठै रा पत्रकारां कन्नै तो अै ई खबरां—कुण नहर मांय सटको नाख पाणी चोर लियो। कुण कीं रै बटोड़ै सूं थेपड़ी चक नै लेयग्यो। कुणसै गांव रो झोटो चोरीजग्यो। कठै लट्ठ-सोटो हुयग्यो। कठै छोरी भाजगी। कठै हथकढ़ अर चिट्टो पकड़ीजग्यो। कठै आ हुयगी, कठै बा हुयगी। अठै तो भई अै ई समाचार! सलेब्रेटी अठै लाधै ई कुण, जिकै री स्टोरी चलाई जा सकै। पण जेठारामजी मरतां पाण सलेब्रेटी बणग्या। पण इण मांय ई जेठारामजीजी रो कीं लेणो-देणो नीं है। जेठारामजी रो नीं लूण है, नीं हळदी अर नीं फिटकड़ी, पण फेर ई रंग चोखो आयो तो आयो। फकत अेक ई कारण। जेठारामजी री मौत कोरोना सूं हुवण रो सक!

खैर... तो बात वा ई सागण कै कोरोना री रिपोर्ट आवण सूं पैली ई जेठारामजी सौ बरस करग्या। अब कांई करयो जावै? प्रशासन सलाह-सूत करनै औ तैय करयो कै जद तांई जेठारामजी रै सैंपल री रिपोर्ट नीं आवै तद तांई 'डैड बॉडी' नैं मोर्चरी मांय रखवा दी जावै। अब डैड बॉडी नैं कुण, कियां मोर्चरी तांई ल्यावै? इण बात रो फेर सेको मंडग्यो। इण बाबत ई अस्पताळ नै घंटाखंड माथाफोड़ी करणी पड़ी जणा कठैई जायनै बात घड़ बैठी। आ न्यारी बात है कै डॉक्टर,कंपाउडर अर सफाई कमर्चारी तकात इण बहस मांय उळझेड़ा हा कै इण केस मांय म्हारी ई ड्यूटी कियां लगाई? कोई कूढीजतो अस्पताळ अधीक्षक नैं गाळ काढै हो तो कोई देख लेवण री धमकी देवै हो, तो कोई सराप देवै हो। पण कीं हुवो भलांई जिकां री इण काम मांय ड्यूटी ही वै ड्यूटी तो बजावै ई हा।

अस्पताळ मांय जेठारामजी री डैड बॉडी नै पैकिंग करण रो दरसाव बखाणण जोग नीं है। बस इत्तै मांय ई समझ जावो कै जेठारामजी री मिरत देह नैं थैली मांय पैक करणो, ऊंट नैं पजामो पैराणै बरोबर हो। अब आप ई स्याणा हो, हाथ लगायां बिना, फकत लक्कड़-डंडा सूं कदै मिनख थैलां मांय घल्या करै कांई? घणो बखाणूं कोनी। केई भाइयां नैं चक्कर आ सकै तो कइयां नै रीस। इण वास्तै माफी मांगतां थकां इण दरसाव री रील माथै कतरणी चलाऊं। फिल्म सेंसर बोर्ड दांई लेखक नैं इत्तो हक तो हुवणो ई चाईजै, आ बात तो थे ई हंकारो!

...तो सौ बातां री अेक बात कै जियां-तियां जड़ाजंत करनै जेठाराम री 'डैड बॉडी' अस्पताळ रै लारलै गेट सूं बारै काढी तो ठाह ई नीं पड़ै हो कै इण बैग मांय जेठारामजी रो खोळियो है कै इयां ई पनसूरो भर नाख्यो है। जेठारामजी रै मोटोड़ै छोरै जगदीश रो जीय तो करै हो कै बापूजी रो छेहलो मूंडो तो देखल्यूं। पण देखण कुण देवै? जे रिपोर्ट नेगेटिव आई तो अेक बार कोनी हजार बार सगळा घर रा देखियो अर जे आयगी पॉजिटिव तो ईं जलम मांय बापूजी रो मूंडो देखणो तो दूर नेड़ै ई को फटकण देवै नीं।

स्टेचर माथै जेठाराम री 'डैड बॉडी' अस्पताळ रै लारलै गेट निसरी तो स्यापो ई पड़्योड़ो हो। अेक तो प्रशासन अर डॉक्टरां वांनै भोळावण देय दी ही अर दूजो पुलिसवाळां भाइड़ा हाथ मांय डांग इयां पकड़ राखी कै बिन्नै जावण री कीं री हिम्मत ई नीं हुय सकै ही। जेठारामजी रा बेटा-पोता न्यात बारै काढेड़ा-सा गेट सूं आंतरै खड़्या टुगर-टुगर देख्यां बगै हा।

मोर्चरी वाळो गार्ड जेठारामजी री स्टेचर नैं देखतां ई चिमक्यो। अेक तो पीपीई किट पैरेड़ा भूत-सा सफाई कर्मचारी अर सागै जेठारामजी री जड़ाजंत काया अर औ माहौल! मोटां-मोटां रो काळजौ जग्यां छोडज्या। गार्ड इण भांत पासै हुयो जाणै मुर्दो नीं, कोई काळौ विसधर हुवै।

बियां तो पांचवै-सातवै दिन अै कर्मचारी कोई नै कोई मुर्दो अठै ल्यावै ई ल्यावै पण इसो मुर्दो तो अै कर्मचारी ई पैली दफा ल्याया हा अर गार्ड ई औ हिसाब-किताब पैली बारी देख्यो हो। गार्ड तो पैलां सूं ई दूर जायनै खड़्यो हुयग्यो हो। हिफाजत रै तौर पर कर्मचारियां पीपीई किट पैर राखी ही, पण तो ई वां रै भीतर गादड़ो बड़्योड़ो हो। हाल जिलै मांय कोरोना रोगी तो सैंकड़ै नेड़ै आयग्या, पण सै ठीक हुय-हुयनै आप-आपरै घरै गया-गुवाया। पण जेठारामजी तो रिपोर्ट आवण सूं पैली ई पग पाधरा कर दिया। खुदा न खास्ता जे आयगी रिपोर्ट पॉजिटिव तो सेकौ मंड जासी।

रात नैं जेठारामजी री लाश तो मोर्चरी मांय मजै सूं सूती रैयी, पण घरआळा नैं समक रात नींद कोनी आई। कणां ई कोई पसवाड़ौ फोरै तो कणां ई कोई। लागै हो समूचो घर ई जागतो पसवाड़ो फोरै हो। मोर्चरी रै गार्ड री हालत तो और ई माड़ी। थम-थमनै ध्यान मोर्चरी कानी उठज्या। बियां जेठारामजी लाई सपत्ता मिनख। जींवता जीय कीड़ी नैं ई को सेधी नीं, मर्‌्यां पछै तो किणनै सेधता ई कियां! पण तोई गार्ड साहब रै घरळ-मरळ माचेड़ी ही। बियां ई समूळी रात कियां मास्क राखीजै, पण डरता सै गूगो धोकै। दिन निसरणौ ई महाभारत हुयग्यो। कैया करै है नीं कै जिकी चीज रो भय हुवै नीं, वो हुयां ई सरै। दिनूगै जेठारामजी री रिपोर्ट तो पॉजिटिव! अस्पताळ सूं लेयनै कलेक्ट्रेट तांई रा कान खड़ा हुयग्या। अबै के करयो जावै? डैड बॉडी तो घरवाळा नैं देवणी ई कोनी। जेठारामजी रो छेहलो संस्कार ई प्रशासन रै गळ मांय घलग्यो। देखो, कांई बगत आयो है! जिकै मिनख नै साब लोगां कदै आपरै नेड़ै कोनी फटकण दियो, फगत उणरै दाग रो ई सरजाम नीं करणो, उणनैं छेहली लकड़ी ई देवणी। जेठारामजी नैं जीवतां-जीव भलांई बास गळी रा लोग ई नीं जाणता हुवो, पण मर्‌्यां पछै तो आखै स्हैर रा, फगत स्हैर रा ई क्यूं, आखै जिलै रा बाजींदा मिनख बणग्या। बणै ई क्यूं नीं, आ जिलै मांय कोरोना री पैली मौत ही। पैलो तो पैलो ई हुवै। भलांई वो कीं ई हुवै।

जित्तो कूकारोळो जेठाराम री मौत माथै रात वां रै घरे कोनी माच्यौ उण सूं सवायो अब माचग्यो। आ तो बेजां करी नीं करतार! ना घर रै आंगणै जेठारामजी री अर्थी उतरसी अर नीं जेठारामजी री जोड़ायत उणरी छाती माथै चूड़ी झाड़सी। न्हुवा-धुवाई अर कांमळ-चादर उढावणी तो गई कठै री कठै।

जेठारामजी री जोड़ायत तो बुसबुसियां पाटनै इमरस करै ही, ''जग्गू रा बापूजी, आ थे के करी?''

पण लाई जेठाराम रै बस मांय हुंवतो तो वै मरता ई नीं। अर जे मरता ई तो कोरोना काल मांय तो दर ई नीं मरता। दाग मांय फकत पांच ई मिनख हा। वै तो चावै हा कै वांरी बैकुंठी नीसरै अर लारै 'राम नाम सत है' बोलतै लोगां रो तांतो ई नीं टूटै। बैकूंठी नीं सही, अर्थी माथै रामनाम री चादर ओढ्यां सूत्यो बेटां रै मोढै चढ नै कुटंब-कबीलै अर प्यारै-परसगियां नैं लारै रुड़ावतो श्मसाण घाट तो जावै। पोता उभाणै पगां अर्थी आगै दंडोत करता बगै, झालर अर संख सूं आभो गरणावै, पण लाई जेठारामजी री आ हूंस मन री मन मांय ई रैयगी।

आथण कोई पांचेक बजे जेठारामजी नै जमदूत दिस्या हा। वांनै देखतां ई जेठारामजी अेकर तो डरग्या। पण भळै याद आयो कै मिरतु री बगत जमदूत तो मिनख रै सिरहाणै ऊभा हुवै। पण अै सिरहाणै तो दूर, कमरै रै मांय ई कोनी बड़ै हा।

पण डाक्टरां तो जेठारामजी नैं मिरत बतायनै आगली त्यारी मांय लागग्या। पण तो ई जमदूत तो बारणै आगै ई ऊभा। जेठारामजी नैं थोड़ौ सक हुयो कै जद डाक्टरां म्हनै मरग्यो बतायनै गाभो उढा दियो तो जमदूत लेवण नै क्यूं कोनी आवै? पण जेठाराम जेड़ै भोळै-ढाळै मिनख कन्नै इण जबर सवाल रो पड्त्तर कठै? पण तो ई जेठारामजी आ तो ताड़ग्या ई हा कै जमदूत मांयनै आंवता झिझकै। कारण चायै कोई रैयो हुवै, पण अै मांयनै तो कोनी बड़ै। जेठारामजी सोच्यौ कै जमदूत कठै ई दूर ऊभा-ऊभा ई फेंकनै गळ मांय फांसरड़ौ नीं घात नाखै। आ चेतै आंवतां ई वै उंतावळा-सा आपरी मिरत देह सूं बारै आया अर सावचेत हुयनै देह रै ऊपर जाय बैठ्या अर जमदूतां री 'एक्टीवीटी' रो लेखो लेवण लागग्या। जेठाराम नैं इण बात रो इचरज हो कै अस्पताळ सूं निसरनै उणरी देह नैं मोर्चरी मांय ल्या पटकी, पण जमदूत नेड़ै ई नीं आया। वै ई लोगां री भांत दो गज री दूरी रै सिद्धांत नैं अपणाय राख्यो हो।

जमदूतां धरमराज नैं आथण ई बता दियौ हो, ''म्हाराज बगत लागसी। म्हे तो म्हारा रास-जेवड़ा लेयनै त्यार हा, कै इन्नै सूं जीव नीसरै अर बिन्नै म्हे उडतै जीव रै फांसरड़ौ घालनै काबू करां, पण म्हाराज! औ जीव तो कुजरबो। डाक्टर जद जेठाराम नैं मिरत घोसित करै हा, म्हे बारणै मांय ई ऊभा हा। डॉक्टरां रै मिरत घोसित करयां रै कोई दस मिनट पछै जेठाराम रो जीव बारै आयो, पण औ कांई? आभै कानी जावण री बजाय

वो तो आपरी मिरत देही माथै ई चिपनै बैठग्यो। अब म्हाराज कोरोना रो डर तो म्हांनै ई लागै।''

''तो पछै?'' धरमराज जमदूतां सूं ई पड़ूत्तर चायो।

''म्हाराज, जे जीव देह सूं उतरनै बारै आसी तो पकायत ई झप लेस्यां। अबार तो मोर्चरी आगै ई ऊभा हां।''

''औ तो खेतीखड़ियो भोळो-ढाळो जीव। आखी उमर धूड़ मांय सिर राखनै गधियै दांई पच्यो। करजो ईं सूं उतरयो कोनी। दाणां ईं नैं बेचणा आया कोनी। ओढण-पैरण अर बोलण रो ईं नै स्हूरा कोनी। ईं रो च्यारजरबी रो खातो तो कोरो पड़्यो है।'' चित्रगुप्त इचरज करता जमदूतां नैं कैयो।

''औ म्हाराज, आप नूंवो खातो संभाळो। बेटा राज रा नौकर है दोनूं। खेती करणी तो कणां ई छोडी इण। दस सालां सूं स्हैर मांय रैवै। आ कुजरविद्या अठै सूं ई सीखी है स्यात।'' जमदूतां हाल ई करेड़ी तफ्तीश चित्रगुप्तजी रै साम्हीं मेल दी।

''ठीक है, ठीक है। वो तो चित्रगुप्त आपै ई देख लेसी। थे तो जीव रो ध्यान राखो।'' धरमराज जमदूतां नैं हिदायत दी।

''म्हाराज, म्हांनै तो लागै कै ईं रै स्हैर री हवा लागगी। कोरोना रो डर कांई हुवै, औ लखग्यो। म्हांनै तो लागै, चिता रै लांपो लाग्यां पछै ई हाथ आसी।'' जमदूतां सार काढ लियो हो।

जमदूत समची रात मोर्चरी आगै ऊभा रैया, पण जेठारामजी किसा बारै आ जावै? आं दस बरसां मांय जेठारामजी इत्ती दुनिया तो देख ई ली ही।

दिनूगै मोर्चरी आगै रैण-गैण। सनेटाइजर करणियां ढोलकी चक्यां दे गेड़ै माथै गेड़ा। मास्क बिना कोई बंदो ई को दिखै नीं। आज रो माहौल तो न्यारो। टीवी चैनलवाळा दूर सूं ई मोर्चरी नैं दिखावै हा। वांरी खबर रो स्टाइल वौ ईज हो, ''अभी थोड़ी देर में निकलेगा इसी मोर्चरी से कोरोना का जिऽऽन।''

जेठारामजी रा दोनूं बेटा डरूं-फरूं हुयोड़ा अभा हा। प्रशासन ई मुस्तैद हो। एम्बूलेस न्यारी, पुलिस री गाडी न्यारी, अेसडीअेम री गाडी न्यारी, नगरपरिषद् री जीप न्यारी। मतलब काल तांई रो 'कुण जेठाराम' आज हनुमानगढ़ रो बाजींदो जेठाराम हो।

दिनूगै दसेक बजे रै आसै-पासै मोर्चरी आगै अस्पताळ री अेम्बूलेंस आ ऊभी हुयी अर देखतां ई देखतां उण मांय जेठारामजी री डैड बॉडी नैं कर्मचारियां इयां पटकी जाणै लूण रो कट्टो नाख्यो हुवै। जीवता हुंवता तो पकायत ई आपरी आदत मुजब कर्मचारियां नैं टोकता, ''इयां के नालायको! सावळ छोडो नीं!'' पण मरयोड़ा जेठारामजी कांई तो बोलता अर कांई कैवता! बस, चिप्या पड़्या रैया देह रै। अेम्बूलेंस चाली तो टीवी चैनळवाळै पत्रकारां रै साथै जमदूत ई लारै-लारै हो लिया।

जमदूत जे पत्रकारां नैं दीसता तो पकायत ई वांरै मूंडै माथै माइक घालनै पूछता, ''कोरोना के इस पहले जीव को यमलोक ले जाते हुए कैसा महसूस कर रहे हैं?''

कोई साहसी पत्रकार औ सवाल ई कर सकै हो, ''सुना है कोरोना से हुई मौत में सरकार और आपके आंकड़े मेल नहीं खा रहे हैं। क्या कहना चाहेंगे आप?''

केई पत्रकार भाइयां रो तो जीय करै हो कै जांवता-जांवता जेठारामजी ई आपरी अेक बाईट देय जावै अर आपरा अनुभव साझा कर जावै। पण औ संभव कोनी हो। तो ई वै जेठारामजी री अेम्बूलेंस नैं तो फिल्मावै ई हा। जेठारामजी टिरहांटै-सी आंख्यां काढता अेम्बूलेंस सूं ई बारै रो दरसाव जोवै हा। समूचो स्हैर वांरी मौत माथै ई बंतळ करै हो। कांई-कांई बंतळ करै हो, आ बतावण री दरकार कोनी। जमदूत अेम्बूलेंस रै लारै-लारै थब्बा चढ्यां आवै हा।

जेठारामजी रै अेकर तो मन मांय आई कै जायनै चिप जाऊं जमदूतां रै अर कर नाखूं कोरोना पॉजिटिव। सगळो टंटो ई मेट द्यूं। पछै तुरंत ई चेतै आयो, ''रे भोळा! जीवआत्मा रै क्यांरो कोरोना! कोरोना तो फगत थारी देही तांई। तूं वां कन्नै गयो नीं अर थारो कारण-कुंडो करयो नीं। ईं वास्तै छेहली दुनिया देखणी चावै तो चिप्यो पड़्यो रैय देही रै।''

आधींटै हांडी फोड़णवाळी जग्यां अेम्बूलेंस रुकी तो जेठारामजी रै जीव सोच्यो, ''ले रे जीवड़ा! अेक क्रिया तो हुसी।''

जेठारामजी आपरै बेटा-पोता, कुटुम्ब-कबीलै, यार-बेलियां, आड़ोसियां-पाड़ोसियां, प्यारै-परसंगियां नै जोया, पण उठै कुण? काग पड़ै, कुत्ता भूंसै। मोर्चरी सूं अेम्बूलेंस में घालती बगत जेठारामजी आपरै दोनूं बेटा अर दोनूं पोतां नैं ऊभा जरूर देख्या हा, पण अठै तो वै दीस्या ई नीं।

जेठारामजी रै अेक उतरै अर अेक चढै, पण कांई जोर!

''इण बेळा ई किन्नै मरया है नालायक। इयां नीं भई कै छेकड़ली बगत तो कन्नै रैय जावां। पण आं नालायकां नै कांई मतलब? आज समझ मांय आई है कै आं नालायक बेटां-पोतां वास्तै बेमतलब ई कंठ मौस-मौसनै माया जोड़ी। ढंग सूं खांवतो-पींवतो तो स्यात इत्तो उंतावळो जांवतौ ई नीं। पण अब पछतायां हुवै कै जद चीड़ी चुगगी खेत।'' जेठारामजी अेम्बूलेंस मांय पड़्या कीरड़ीजै हा।

जीवता हुवता तो ललकर मारता, ''अरे नालायको! किन्नै मरग्या! लारै कांई थांरी मां... नैं रोवो! इन्नै म्हारै कन्नै क्यूं बळ आवो नीं?'' वां स्यात बोलण री आफळ ई करी पण कंठ अर जीभ तो देह मांय ई रैयग्या हा अर देह नैं ठाह नीं कित्ता थैलां मांय भर नाखी ही। जे देह सूं थैली उतारण ढूकै तो थैली मांय थैली, थैली मांय थैली प्याजियै रा छूंतका ज्यूं उतार ई बोकरो भलांई।

जेठारामजी देख्यो कै अेम्बूलेंस री लारली गाडी सूं तीन जणा उतरया।

''तो कांई अै ईज हांडी फोड़सी ?'' जेठारामजी नैं अणूती झाळ आई।

छोरा कन्नै हुवता तो पकायत ई कान पकड़ नै कैवता, ''अरे नालायको ! हांडी तो कम सूं कम थे फोड़ दयो। न्हात ई थांरो बाप हूं।''

पण वै कर्मचारी क्यां वास्तै हांडी फोड़ै हा। वांनै तो अेम्बूलेंस नै सैनेटाइज करणी ही। पीठ लारै चकी ढोलकी सूं पांच-सात फंवरा मारया अर मुसाणां मांय ल्या बाड़या। जेठारामजी देह माथै चिप्या सगळो खिलको देखै, पण करै तो करै कांई ?

अेम्बूलेंस सूं जेठारामजी री डैड बॉडी उतारी ई कोनी ही कै मुक्तिधाम विकास कमेटी रा पदाधिकारियां रोळो घाल दियो। वांरो कैवणौ हो कै कोरोना रै मरीज रो अठै दाग कोनी हुय सकै।

जेठारामजी रै जीय मांय आई कै अेम्बूलेंस सूं फदाक मारनै सीधौ कमेटी रै खरड़पंचा कन्नै जायनै कैवै, ''मुसाण थांरै बाप रा है, जिको म्हारो अठै दाग कोनी हुवण देवो। अरे नालायको ! मुर्दे रो दाग तो मुसाणां मांय ई हुया करै। कदे मुर्दे नैं घरां दाग देंवता देख्यौ है ?'' पण जेठारामजी आपरी देह नैं छोडनै कियां जा सकै हा। देह छोडी नीं अर जमदूतां झफ्यो नीं। पण जेठारामजी री सबोधी राखी मोटोड़ै बेटै जगदीश। सबद तो जेठारामजी रा हा ई। बस जगदीश तो मूंडौ-मूंडौ खोल्यो।

जगदीश री बात सुणनै कमेटी रो अेक खरड़पंच बोल्यो, ''भाई, म्हे कद कैवां कै मुरदै नैं घरे दाग देवो। बिन्नै परलै पासै घणो ई बीड़ पड़्यो है, बिन्नै देय दयो।''

''बिन्नै देई तूं तैरै जामणियां नैं। म्हनै तो अठै ई देयसी। अरे नालायको ! घरे आंगणै मांय म्हैं सुवाइज्यौ नीं, न्हुवायो मन्नै नीं। शंख-झालर मेरा बाज्या नीं, पिंडदान मेरो हुयो नीं। हांडी मेरी फूटी नीं, पाणी मैरै लारै ढोळीज्यौ नीं अर अब मुसाणा सूं ई बेदखल करणा चावो।'' जेठारामजी देह माथै पड़्या-पड़्या ई आकरा हुयां बगै हा।

''बिन्नै कोनी दयां, दाग तो अठै मुसाणां मांय ई हुसी।'' अबकै जेठारामजी रै छोटियै बेटै ओम हिम्मत करी।

''अठै तो म्हे कोनी हुवण दयां।'' खरड़पंचजी फैसलो-सो सुणा दियो।

''थे कुण हो भई नीं हुवण देवण वाळा ? बाप रो राज है ? देखां तो कियां कोनी हुवण दयो। कुणसो रोकै, आओ दिखां !'' ओम साम्हीं अड़ग्यो।

''वा मेरा शेर ! आ हुयी नीं बात। मार साळां रै तुळवै में।'' जेठारामजी उबक्या।

जमदूतां उमर गाळ दी मिरत आत्मा नैं धरमराज कन्नै लेय जावता, पण वां इसो खिलको तो आज तांई देख्यो ई कोनी हो।

बिन्नै धरमराजजी जमदूतां नैं फोन माथै फोन करै, ''बगत टिप्यां बगै, जेठारामजी री आत्मा नै लेयनै बेगा-सा हाजर हुवो।''

कैया करै नीं कै दूध रो बळेड़ो छाछ नैं ई फूंक मार-मारनै पीवै।

धरमराजजी भोळाराम रै जीव नैं भूल्या कोनी हा। औ तो भलो हुवै नारदजी रो जिका वीणा सट्टै जीवात्मा ल्या नाखी। आज तो वीणा नैं पूछै ई कुण है।

पण कांई जोर? जमदूत साफ कैय दियौ, ''म्हाराज! म्हारै कन्नै इलाज नीं है। कोरोना रो रोगी है आगलो। डैड बॉडी रै चिप्यो बैठ्यो है। कुण लोवै लागै? इसो ई सोरो है तो थे पितासल्यो?''

धरमराजजी बोल्या, ''कोई बात नीं। घंटा, आधघंटा मांय तुरड़सी ई। पण देख्या, ध्यान राख्या, भोळाराम री दांई फटकार नीं जावै।''

''वा तो म्हाराज आप चिंता ई ना करो। इन्नै छोरै चिता रै लांपो लगायो अर बिन्नै ईं रै गळ मांय फांसरड़ो घाल्यो। पण आंरो झोड़ तो सलटै।''

बात नैं बधती देखनै प्रशासन आगीनै आयो अर बोल्यो, ''देखो, बीच बिचाळो करल्यो। घणी दूर तो नीं, पण थोड़ै सै पासै करल्यो।''

जेठारामजी रो छोटियो छोरो ओम गाभां बारै हुयग्यो। बोल्यौ, ''कुण? कुण करलै? मुसाण कीं रै बाप रा कोनी। अठै ई करस्यां, अठै!'' ओम जग्यां कानी आंगळी करतो बोल्यो।

बात बिगड़ती देख प्रशासन फट पलटी मारी अर खरड़पंच नैं बोल्यो, ''आप सब परे हटो। यह प्रशासनिक मामला है। आप इसमें दखलंदाजी नहीं कर सकते।''

दोनूं पार्टी थोड़ीदार वास्तै मोळी पड़गी। स्यात वै आगै री रणनीति बणावण लागी ही। प्रशासन जेठारामजी री डैड बॉडी अेम्बूलेंस सूं उतारण रो हुकम सुणायो। कर्मचारी तो जाणै हुकम नैं ई उडीकै हा। जेठारामजी री डैड बॉडी अेम्बूलेंस सूं उतारनै धू-पटकी सारै ऊभी हाथरेहड़ी माथै।

जेठारामजी बोल्या, ''अरे नालायको! कीं तो शरम करो। मरणो थांनै ई है। थे कोई अमर कोनी रैयसो। कोरोना सूं मर्‌यो तो कांई हुयो, हूं तो मिनख! इयां दुरगति तो ना करो।'' जेठारामजी गळगळा हुंवता कैयो तो कर्मचारियां नैं पण झाळ आवै ही बेटां-पोतां माथै। ''नालायक ऊभा-ऊभा मुंडौ पाड़ै। इयां नीं कै हाथ लगा लेवै। इयां कोरोना सूं मरस्यो तो मरस्यो ई नाजोगो!''

जेठारामजी री देह नैं रेहड़ी मांय नाखतां ई जगदीश रेहड़ी नैं ठरड़तो दाग देवण री जग्यां कानी ब्हीर हुयो। लारै छोटियो बेटो ओम, दो पोता अर अेक पाड़ोसी। फकत पांच मिनख।

''अरे नाजोगो! बित्ती दूर तो म्हनै मोढां माथै ले जाओ, फेर ई थांरौ बाप हूं। इयां कांई डांगरां दांई ठरड़ता ले जावो? कीं तो सरम-संको करो रे नाजोगो!'' पण जीवतै जीय लोग जेठारामजी री बात नीं सुणी, मर्‌यां पछै तो सुणतो ई कुण?

कमेटी रा मेंबर सलाह-मसवरौ करनै फेर आ ऊभा हुया। वै किणी ई सूरत में अठै, खास करनै सैड तळै तो दाग हुवण देवण रै मूड मांय कोनी हा। पण जेठारामजी रा बेटा जेठारामजी री मिरत देह नैं सैड कानी ठरड़ लेयग्या हा।

प्रशासन फेर पलटी मारी। अबकै वौ अटकळ सूं सिटकळ मारण री तेवड़ी,

''प्रधानजी, आप समझदार मिनख हो। कालनै अखबारबाजी हुयसी। कै कोई मिनखपणै नाम री चीज ई कोनी बची? आप समझो बात नैं।''

''पण साब! कोरोना पैसेंट रो?''

''हम हैं ना! आप चिंता क्यों करते हो?'' प्रशासन कियां ई आ ब्याधी मुकावणी चावै हो।

प्रधानजी कीं ठंडा पड़्या, पण खरड़पंच पाणो मांड्यां ऊभा हा।

प्रशासन सलो मोड पर बीच-बिचाळै रै सिद्धांत री जुगत बिठावण री आफळ करै हो। जमदूत माथो पकड़्यां मिरतुलोक री दुरगत माथै अफसोस परगट करै हा। इत्ता बरसां मांय वां कदैई अैड़ो दरसाव नीं देख्यौ। घोर पापी सूं पापी मिनख रो जीव लेयनै गया, पण घणै सन्मान साथै। जेठाराम तो बसपुगतां लाई किणी कीड़ी नै ई नीं संताई ही। अैड़ै सधीरै जीव री आ गत?

जेठाराम सूं और कोनी देखीज्यो। वो होळै-सी आपरी देह सूं उतर्‌यो अर नीची धूण घाल्यां बैठ्या जमदूतां कन्नै आयनै बोल्यो, ''ल्यो आवो भाई लोगो, चाला!''

अचाणचक जेठाराम रै जीव नैं कन्नै आयो देखनै जमदूत अेकर तो चिमक्या, भळै अफसोस करता बोल्या, ''भाई म्हारो इण मांय कोई कसूर कोनी। म्हे तो धरमराज रै हुकम रा ताबेदार हां। म्हांनै थांरै सूं घणी हमदरदी है। म्हे तो बस इत्तो ई कर सकां कै थांरी कपाळ किरिया हुवण तांई और थम सकां।''

''नहीं रे भाई! म्हैं मिरतुलोक मांय अेक मिनट ई थमणो नीं चावूं। जे म्हैं भर्‌यै भरम अस्पताळ सूं ई सीधो थांरै कन्नै आ जांवतो तो औ सो-कीं म्हनै क्यूं देखणो पड़तो! थे तो जित्तो बेगो होय सकै, म्हनै धरमराज कन्नै पुगाय दो। म्हनै तो वां सूं फगत अेक सवाल पूछणो है, ''कांई म्हारो मुसाणां मांय ई सीर कोनी?''

◆◆

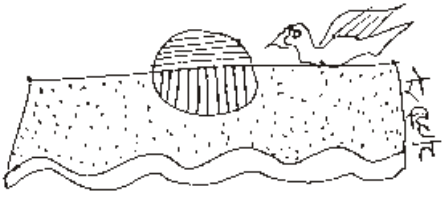

पूर्ण शर्मा 'पूरण'

हेरणी

जेठ रो महीनो। बाळै इण नै। कुण मांग्यो हो? पण दादो कैंवता करसै मांग्यो लाडी। क्यामी? क्यामी क्यांरी, बिरखा खातर। जित्तो तपसी बित्तो ई बरससी। ठाह नीं कदसीक बरससी। जेठ उतरण चाल्यो पण हाल तो किन्नैई घिरेड़ो दीसै कोनी। घिरेड़ो छोड, कोई फोई चिलकती दीसै तो ई जीव टिकै। सिंझ्यां ढळी नै केई ताळ हुयगी। गुदळको-सो हुय रैयो हो, पण ताती बिसी ई चाल्यां बगै ही। आज तो जाणै सो-कीं राख करनै ई छोडसी। म्हे दोनुआं सिर माथै दुमालिया लपेट राख्या हा, पण कानां रा लवा सिलग्यां जावै हा। दोनूं मतलब, म्हैं अर नूवोड़ो सगो। बेटै रै ब्याह पछै पैलीपोत ई आया हा। घरां आज चेळको न्यारो ई हो। बीनणी तो राजी ही जकी ही, जोड़ायत रा ई पग कोनी मंडै हा। म्हैं हांस दियो, ''आज तो चकीजी फिरै...। पंजा ई कोनी मंडै नीं!''

''थोड़ी ताळ पछै थानै ई देख लेस्यां...।'' जोड़ायत कद घाट घालै ही। अर कैवै ई साची ही, सगो आयेड़ो हुवै तो कीं खेचळ-पाणी रो तो फरज बणै ई हो। अर थोड़ी ई ताळ मांय बातां ई बातां मांय सगै साम्ही मूंडो चरको करण रो जिकर कर दियो। रिटायर फौजी माणस। किसी भींट ही। संकता केई ताळ तो ना-नुकर-सी करबो करया, पण घणो जरजरू कोनी करणो पड़्यो। थोड़ी ताळ पछै म्हे दोनूं ऊपर छात माथै बैठ्या हा। दिन तो अलबत्त छिपग्यो हो, पण अंधारो हाल हुयो कोनी हो। आथुणै पासै कीं उजास जांवतो-जांवतो पग थामनै ऊभो रैयग्यो हो जाणै। घणी उडीका-उडीकी कुण करै। छेकड़ म्हैं डोळी सारै धरेड़ो स्टूल लेय आयौ अर दोनूं माचां बिचाळै जचा लियौ। बाकी रो सारौ सामान त्यार हो ई।

ठिकाणो :
प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र
रामगढ़, तहसील-नोहर
जिला-हनुमानगढ़(राज.)
मो. 9828763953

दो एक पैगड़ा तांई तो म्हे इल्ली-बिल्ली करता रैया। फलाणौ रिस्तेदार इयां है...धीकड़ौ बियां। रिस्तेदारियां मांय थब्बा खांवता-खांवता थोड़ी ताळ पछै म्हे दोनूं देस-विदेसां घूमण लाग्या अर छेकड़ आं सगळी चीजां सूं ऊपर हुंवता गया। दूसरो अधियो खोल्यां पछै तो म्हे अठै छात माथै हा ई कोनी। छात माथै कांई, म्हे तो देस मांय अर सावळ पूछो तो इण दुनियां मांय ई कोनी हा। धरती सूं ऊपरोऊपर जठै बायरो कतैई ठंडो हो, म्हे लगोलग बध्यां ई जावै हा। सगो केई ताळ तो संको मानबो कर्‍या, ''ना... ना... बस करो। और नीं...।'' पण दो-अेक ठरगल-सा लियां पछै तीजै रै आप ई हाथ घाल लियो। अर पछै म्हे बठै हा जठै सुरग बतावै। अबै म्हे सुरग मांय चालती ठंडी पून रा दावा लूटै हा।

...पण अै दावा घणी ताळ तांई कोनी लूटीज्या।

''अरे... मार दियो रैय...ऽऽ! अरे छुटावो रे...।''

''लै...ऽऽ...और लै.. रांड...।''

''अरे... गाम... राम रैयऽ...!''

म्हे दोनूं जित्ता ऊंचा गया हा बठै सूं हेठै आवण मांय दर ई जेज कोनी लगायी।

''कुण है?'' सगो जी पूछ्यो।

म्हैं उत्तरादी पासै गळी रै मोड़ परलै घर कानी ख्यांत्यौ। अठै सूं कीं दीसै तो कोनी हो पण म्हनै ठाह हो आवाज बठै सूं ई आवै ही। आ कोई आज हुयेड़ी ताजा बात तो ही कोनी। रोजीना रो नाटक हो।

''बो धोळियो माळियौ दीसै है नीं थांनै... बीं रै परलै पासै रो घर है।'' म्हैं सगो जी नै अैन सही-सही लोकेसन बतायी। भळै बोल्यो, ''बेकार है स्साळौ। रोज कूटै लुगाई नै।''

''क्यामी?''

अब क्यूकर कैवूं सगो जी नैं कै दारू पीयां पछै क्यामी कूट्या करै? बियां सुरगां सूं आयां पछै ताती तो इंयां ई लागै ही। म्हैं दूजी ढाळ कैयो, ''लायण लिखायनै ल्यायी है ओ...।''

''आ तो कोई बात कोनी हुयी।'' सगो जी इतराज कर्‍यो। कर ई सकै, रिटायर फौजी है। इयां इन्याय कियां देखीजै।

पण म्हे तो रोज ई देखां। बाण पड़री है। लायण लुगाई गरळावै जद अेकर-अेकर तो रीस आवै अर भाजनै छुटावण ई जावां पण जायां कांई हुवै, लगैटगै लेणै रा देणा ई पड़ै। गाळ सुणनै पूठा आय जावां। गाळां सूं गूमड़ा तो कोनी हुवै पण सुणीजै तो कोनी। अर बीं जुवान कनै तो बस गाळां ई है। जुवान? जुवान क्यांरो... जूतियै मांय ठोकणआळो खबीड़ो हुवै जाणै। काळो अर कुरदांतळो न्यारो। लायण लुगाई कानी देखां तो रीस आवै। कुण हो निरभाग... जको इण सूधी गाय नैं पजा मार्‍यो। लुगाई सूधी है... पण पैलां तो औ धोरी ई

सूधौ हो। ब्याह तांई तो इण रै मूंडै मांय जीभ ई कोनी ही। ना कोई बैल हो। बीड़ी तकात कोनी पींवतो। नौकरी तो ब्याह सूं साल खंड पैलां ई लागग्यो हो। साची बात तो आ ही कै ब्याह ई बींरी नौकरी रै कारण ई हुयो हो। नींतर इण गेजै नै कुण बूजी देवै हो? अर पैप बरगी इसी बीनणी बारणै पड़ी ही ना! हाथ लगावै तो मैली हुवै। दो टाबरां री मां है पण लागै कोनी। कांस मांय जीवै पण कानी देखै तो दो घड़ी देखबो करो। जीव कोनी धापै। बेमाता घड़ण लागी तो जाणै सगळी रीझ अठै ई लगादी जको ई कानी देखै, बाको पाड़्यां देखतौ ई रैय जावै। ब्याहवली आयी जद तो पूरै बास-गळी मांय हाको माचग्यो हो। अर केइयां तो मूंडै माथै ई कैय दियो हो, ''लै... लै... खांड री बोरी रै गंडक लागग्यो।''

ब्याह रै दो साल मांय-मांय ई मां-बाप दोनूं राम नै प्यारा हुयग्या अर ओ गंडक अबै सेर बणण लाग्यो। सरू-सरू मांय तो कदे-कदास ई बणतो। कीं रोका-टोकी ई हुयी। अेक-दो बरियां सासरैआळा ई आया। समझावा-बुझायी ई करी पण... समझणो हुवै तो समझै नीं! सगळा कैय-सुणनै धापग्या तो अेक दिन बण खुद कैय दियो। आ कद सुहावै। ''लै... लै... थूं कुण है म्हनै कैवणआळी? खूब रैचक मचायो घरां।'' घणी पीयेड़ी कोनी ही, पण नाटक घणो ई कर्‌यो। लायण अबोली रैयगी पण कित्ताक दिन? रोज काळजै माथै आरी चालै तो चुप्प रैयीज्या तो कोनी। भळै अेक दिन साम्ही हुयली। केई ताळ पाणो मांड्यो पण छेकड़ भाईड़ै हाथ काढ लियो। बस... अेकर काढ लियो तो काढ लियो। बाण पड़गी। नित री पीवणी अर नित री लड़ाई करणी। थोड़ी पीवै बीं दिन ई लड़ै अर बोहळी गाळै बीं दिन ई। लड़ाई करणी अर लायण नैं कूटणी जाणै बीं रो तैयसुदा काम हुयग्यो।

''जूतांआळा कोनी?''

सगो जी रो मांयलौ फौजी जाणै अचाणचक ई हाथ मांय बंदूक लेयली।

''आऔ चालां।''

''बावळी बात कोनी कर्‌या करै ओ...।'' म्हैं सगोजी नै थामणौ चावूं, पण सगोजी कद थमै। कैयदी तो कैयदी।

''ओ रैय... मार दियो रैय...!''

'अरे मरज्याणा छोड दै...।''

''अरे डाकी छोड दै...।'' लुगाई रो कळळाटो सुण्यां ई जावै हो।

म्हे दोनूं पेड़ियां-पेड़ियां हेठै आया अर उतावळ करनै कूंटआळै घर साम्हीं पूग लिया। म्हे पूग्या इत्तै तो पूरो बास पूग लियो... राणोराण। सगळा गळी मांय भींतां सारै ऊभा मजा लेवै हा। हां ...घणकराक मजा लेवण खातर ई आवै हा रोज। केई बाण मुजब अर

केई मजबूरी मुजब। कैयां-सुण्यां कीं नीं बटै तो मजबूरी नैं मजा मान लेवौ भलांई। पण साची बात तो आ ही कै लेवै सगळा मजा ई हा। म्हे ई रळग्या इण भीड़ मांय।

पण ना...। म्हे नीं फगत अेकलो म्हैं ई। सगोजी म्हारै सागै कोनी हा।

''थारी काळी गाय हूं रैय...।''

''अरे छोड दे राकस..।''

''अरे ना मार रैय... जुलमी...।'' लुगाई रोयां बगै ही अर साथै ई गाळ ठोक्यां बगै ही।

भाइड़ै हाथ मांय अेक कामड़ी लेय राखी ही अर लेद्देमार लुगाई रै आवै बियांई ठरकावै हो अर साथै मूंडै छुटी गाळ ई।

''लै रांड... लै और लै...।''

''अरे छोड दे... अरे थारै टाबरां री मां हूं रैय...।''

''हफ्फ...ऽऽ ...टाबरां री ...मांऽ... किण रै... टाबरां री? ...जाणै म्हैं कीं जाणूं कोनी... हैं...?''

अर सटाक...ऽऽ...कामड़ी लुगाई रै मगरां माथै सरड़काई।

''ओ रैय... मार दियो रैय... कमीण...। अरे छुटावो रैय... गाम...राम छुटावो... अरे सगळा ई मरग्या कांई...?''

कामड़ी री चोट साथै ई लुगाई जोर सूं कूकी अर भींत साम्हीं खड़्या लोगां कानी हाथ करनै गरळाई।

केइयां रै करण-करण-सी हुयी, पण हाल्यो कोई कोनी। कीड़ी-सी तो म्हारै ई चढै ही, पण आंख्यां साम्हीं लारला चितराम सैनपान बरजै हा।

महीनो-अेक ई हुयो हुयसी। रोज-रोज रै इण तोतकरासै सूं आंती आयेड़ा सगळा बासआळां अेक राय करी कै थाणै मांय परचो देय देवां। दूजै दिन परचो देय आया। पुलिस ई आयी। पण पुलिस इयां सादै-बुधै रै कांई कर सकै? भाईड़ै रै मन मांय ठाह नीं कांई भावी बोली कै तीन-च्यार दिनां तांई जाबक ई सौंफी रैयो। पछै अेक दिन पीयली। अर बो ई ब्याह अर बै ई गीत। बास तो भेळो हुवणो ई हो। भाईड़ै नै कोई टोकै बीं सूं पैलां ई बास नैं आडै हाथां लेय लियौ बण।

''म्हैं भोळो कोनी ...थे समझौ इयां ई लटर है ...सो जाणूं थे क्यामी परचो दियो... हां... हां सो जाणूं ...म्हैं ...पण ...म्हैं ...म्हैं थारली आ चाल कामयाब कोनी हुवण देवूं... थे तो इणनै चाबणी चावो... काची नैं ई... आछी लागै... थांनै आ ...आछी ...।''

अर बास रो मूंडो इत्तोक हुयग्यो। लुगाई-पताई अर छोरी-छापरियां बिचाळै ऊभा मोट्यारां माथै जाणै हजारूं मण पाणी पड़ग्यो! थोड़ी ताळ पछै गळी मांय कोई कोनी हो।

भाईड़ै रै आज रै नाटक सूं... बास रै कित्तीक करण-करण हुयी ठाह कोनी, पण सगोजी तो अेकदम ई स्यारै बरगा हुय लिया।

''लै... लै, थूं अेक ई सेर जाम्यो है कांई अठै? लुगाई नै मारतां सरम कोनी आवै... नीच?'' अर सगोजी भाईड़ै कानी लफ्या। कानी आंवता देखा, भाईड़ै गाळ ठोकी सगै नैं अर हाथ मांयली कामड़ी हलाई, पण सगो तो फौजी माणस हा। इसी कामड़ी घणी देखेड़ी ही। बरोबर अंगरेजी मांय गाळ ठोकी अर भाईड़ै री गिच्ची झाल ली।

फौजी माणस। जोर रो कांई नेप? अर फेर इण घड़ी तो हुवै ई कियां हो। ताजा-ताजा ऊपरियां आयेड़ा हा। भाईड़ै नैं धक्को दियो तो थोबी रेत मांय टिकी जायनै। फेर ई किस्यो थम जावै। झोला खांवतो ऊभो हुयग्यो, बियां ई गाळमगाळ। मूंडो रेत सूं भरेड़ो। भाईड़ो टिटण दांई पूठो चालै हो।

''अबकै आई थूं... हफ्फ... भैण...।''

लुगाई अबै कंवळै सारै ऊभी ही अर बारणै मांय दोनूं टाबर। बाबै नैं कूटीजतां देख बै होळैसीक सरकनै आपरी मां कनै आयग्या। पण मां बां कानी कोनी देख्यो। देख्यो लोगां ई कोनी। सगळी आंख्यां तो फौजीसाब अर सेर भाईड़ै कानी देखै ही।

भाईड़ै पाछ कोनी ली अर सगोजी नैं सूगली-सूगली गाळां ठोक्यां बगै हो। पाछ सगोजी रै मांयलै फौजी ई कोनी ली। बै आपरी बंदूक साम्यां दे-तैरै री दे-तैरै री गोळ्यां ठरकायां जावै हा। पण भाईड़ै रै कोई फरक ई कोनी पड़ै हो। भाईड़ो मार खायां बगै हो अर गाळ ठोक्यां बगै हो।

...पण फरक लुगाई रै पड़ग्यो।

''जुरत... कोनी है... मारणै री...।'' अचाणचक ई लुगाई रै मूंडै सूं बोल गरज्या। अेक जोर रो धमाको हुयो जाणै अर फौजीसाब री तड़ातड़ बाजती गोळ्यां रो खड़को मांय दबग्यो।

''थूं कुण है... मारणआळो... म्हारो धणी... म्हारै मारसी तो मारसी...।'' हेरणी लुगाई अबै नारड़ी हुयगी ही।

फौजीसाब री बंदूक छूटगी अर बै हा बठै ई जड़ हुयग्या। गळी मांय जाणै सांप सूंघग्यो। थोड़ी ई ताळ मांय गळी खाली हुयगी, पण सगोजी सूं पूठौ आवणो भारत हुयग्यो।

◆◆

 ISSN : 2320-0995

अमीर अहमद सुमन

भलो मिनख

वा लाण बापड़ी काठी दुखियारी ही अर होवै भी क्यूं नीं? घरधणी दारूड़ियो जको हो। नसै मांय घरै आवतां ई अैड़ी राड़ मांडतो कै मत पूछो बात! घरां रै मांय पसरयोड़ी सांयती मांय जाणै गाजतो घोरतो बिजळो पड़्यो हुवै। अैड़ी खोड़ीलायां करतो भस-भसाटा सागै बरतण-भांडा बारै फेंकतो थको गाळियां रै सागै ही लुगाई नैं मारणी-कूटणी जाणै उणरो नतनेम बणग्यो हो। अेक दिन तो जाणै सगळी ई हदां पूरी कर दी। आधी रात रा पीयोड़ो घरां आयो अर लुगाई नैं मार-कूट'र घर सूं बारै काढ दी। वा बापड़ी सड़क माथै ऊभी रोवै-झींकै ही। उणी टेम पाड़ोस मांय रैवणियो अेक भलो मिनख उणनैं आपरै गैराज माथै रैवण सारू ठौड़ देय दी। सगळा मिनख उण भला मिनख रो घणो मान करै हा अर कैवण लाग्या कै लाई घणो आछो काम कर्‌यो, नीतर बापड़ी जवान लुगाई रात मांय कठै जावती! बिचारी नैं रैवण सारू ठौड़ मिलगी।

वा दुखियारी मिनखां रै घरां बुहारो-पौंछो करती आपरी गिरस्थी नैं चलावण री खैचळ करण लागी। अेक दिन म्हैं उणसूं पूछ्यो कै उण भलै मिनख रा गैराज मांय अबै तूं सुख-चैन सूं अर इज्जत सूं रैय रैयी है नीं? वा म्हनैं घणी ताळ तांई घूरती रैयी अर पछै मंदरी आवाज मांय बोली, ''वो दारूड़ियो हो, आ सगळा जाणै हा, पण औ गैराज वाळो कितरो भलो है, आ फगत म्हैं ईज जाणूं हूं।''

म्हारै मूंडै सूं बोल फूटबा रै पैली ई वा बठै सूं ब्हीर होयगी।

◆◆

ठिकाणो :
'द ड्रीम'
सुमन मार्ग, बहीर
टोंक-304001
मो. 9414221204

ISSN : 2320-0995

भाजी कोनी, हारगी कल्लो

यूं तो उणरै दो भाई अर अेक छोटी बैन ही। सुण्यो तो हो कै उणरो बाप भी हो, पण उणनैं घणा थोड़ा मिनख देख राख्यो हो। भाई मोटा हा। वै टाबर कद हा, आ तो ठाह कोनी, पण वै अचाणचक ई मोटा होयग्या हा। सैंग दिन बीड़ी, गुटको अर सट्टा खेलबा मांय ई लाग्योड़ा रैवता। बैन तो घणी नान्ही ही अर हाल ताई साव टाबर ही। मां रै सागै घरां-घरां मांय जावै ही। मां काम पर जावती बेळा उणनैं सागै ईज राखती ही। घर री दाळ-रोटी मां अर उणसूं ईज चालै ही। आ बेलदारी करै ही, मजूरी करै ही, जवान होबा पाछै भी टाबरां ज्यूं भोळी बातां करै ही, जिणसूं सागै काम करणिया बेलदार अर मिस्तरी उणसूं दिन भर हंसी मजाक करै हा।

बडो मिस्त्री उण रो घणो ध्यान राखै हो। उणरी घणी उमर होयगी ही, जिणसूं उण मांय दुनियादारी री समझ ही। इणसूं वो इण रो बेसी ध्यान राखै हो। वो दिन भर उणसूं पाणी भरावण रो ईज काम करावै हो। वो जाणतो हो कै लुगाई फावड़ो कोनी चला सकै। उणनै घरवाळा कल्लो कैवता, इण लिहाज सूं सगळा आड़ोसी-पाड़ोसी अर मिस्त्री-मजूर भी कल्लो ईज कैवता हा। कल्लो री जवानी, उणरी मीठी बंतळ, चंचळता धीमै-धीमै च्यारूंमेर चावी होवण लागगी। मिनखां नैं वा रमेकड़ो लागती ही। बडो मिस्त्री जाणतो हो कै आ सगळै परिवार नैं रोट्यां री देवाळ है। सगळा री रोट्यां ई नीं, भाईड़ां री बीड़ी-तंबाकू भी उणरै ताण ईज आवती ही। कल्लो ई अबै बडी तो हायेगी ही, पण उण मांय हाल दुनियादारी री समण नीं बापरी ही। आ बात बडो मिस्त्री आछी तरै सूं जाणतो हो।

बडै मिस्त्री नैं अेक दिन अचंभो हुयो कै हमेस हंसबा वाळी छोरी कल्लो री आंख्यां मांय आज आंसू कियां तिरै है? वो उणनैं पूछ्यो, ''कल्लो! कांई हुयो?''

आ सुणतां ई वा फाट-फाट'र रोवण लागगी अर बोली, ''जकै दिन भी पगार मिलै है, म्हनैं म्हारा भाईयां री मार खावणी पड़ै अर मां भी उणां रो ईज पख लेवै।'' कैय'र वा घणी देर तांई रोवती रैयी।

दूजै दिन कल्लो काम पर कोनी आई। तीजै दिन भी कोनी आई अर ठाह पड़ी कै कल्लो रो कोई पतो कोनी। जवान छोरी रै गायब होवण सूं भांत-भांत री चरचा होवण लागी। बडो मिस्त्री भी घणो उदास होयग्यो। वो सोचै हो कै आपरी पाळ्योड़ी चिड़कली नैं उण गमाय दी। अचाणचक उण रो बेलदार हंसतो थको कैवण लाग्यो, ''उस्ताद! कल्लो भाजगी।''

बडो मिस्त्री बेलदार नैं रीस मांय घूरै हो। इणसूं बेलदार डरपग्यो। अबै बडै मिस्त्री री आवाज आई, ''अरे भाजी कोनी कल्लो, कल्लो आपरा घरवाळां सूं ईज हारगी।''

बडै मिस्त्री री आंख्यां मांय ई पाणी तिरण लागग्यो।

◆◆

संजय पुरोहित

झपिया म्हाराज

म्हैं म्हारै टापरै रै सारै ई मूंडो घाल'र काचै तावड़ै री गरमास रै सागै चाय रा सबड़का लेवै हो। इणी टैम अेक मोटरसाइकिल रै सॉकर नैं आपरी अणूती चर्बी सूं अंडरप्रेसर करतां थकां झपिया म्हाराज आय टपक्या। म्हैं म्हाराज नैं देख्या। रामा-स्यामा करया।

पैली आप हुकम नैं औ तो बताय ई दूं कै झपिया म्हाराज कुण? झपिया म्हाराज अेक जबर मिनख है। अखबार हुवो कै टीवी, सदीव खबरां मांय रैवै। अखबारां मांय छपण आळी सौ फोटुवां मांय सूं पचास में तो कठै न कठैई आपरो मूंडो घाल्योड़ा दीख ई जावै। आ वांरी कला है। वांरी साईंस है। वांरी कैमेस्ट्री है। वां रो मैनेजमेंट है। किणी संस्था रो कोई भी जळसो हुवै, म्हाराज पंचायती में हाजर। वै केई संस्थावां मांय माडाणी घुस्योड़ा है। केई संस्थावां तो वै खुद ई बणाय राखी है। इन्नै-बिन्नै अर ठाह नीं किन्नै-किन्नै आप ठूंसीज्योड़ा है। श्मसाण कल्याण समिति सूं लेय'र संस्कृति विणास न्यास हुवो, भैंसाबाड़ा उन्नति मंच हुवो कै पछै उपेक्षित लिखारा मोरचो हुवो, हरेक जग्यां म्हाराज किणी न किणी रूप में बिराज्योड़ा ई है। वांरी लीला अपरम्पार।

झपिया म्हाराज कोई नसौ-पत्तो नीं करै। बस अेक ई नसो है—वो है खबरां रो, फोटुवां रो। इण नसै रै मिस म्हाराज फोटुग्राफर अर पत्रकारां खातर अणूतो सन्मान राखै। टेम-टू-टेम वांनै राजी करता रैवै। म्हाराज बाळपणै सूं ई झपिया है। म्हाराज काची उमर सूं ई हरेक चीज झप'र हासल करी। इण कारण सूं ई वांरो नांव झपिया म्हाराज पड़ग्यो।

ठिकाणो :
धोबी धोरा
बीकानेर (राज.)
मो. 7014073564

मौकै पर चौको मारण में म्हाराज रै कोई आसै-पासै ई नीं फटकै। कला, साहित्य, संस्कृति, समाजसेवा आद हरेक फील्ड मांय झपिया म्हाराज हाथ-पग मारया है। डिग्री, नौकरी, नांव, रुपियो सै-कीं झपिया अर झप रैया है। कोई इसो खूणो नीं छोड्यो जिणसूं झपिया म्हाराज कीं झप्यो नीं हुवै। भांत-भांत रै कामां रा बंटाधार करयां पछै अबार झपिया म्हाराज साहित रो कबाड़ो करण ढूक्योड़ा है।

असल में झपिया म्हाराज क्रिकेट रै आलराउंडर खेलाड़ी री भांत है। वै हरेक मौकै नैं परोटण रो जबरो हुनर राखै। वै आपरै कुचमाद सूं तिरियां-मिरियां हुयोड़ै माथै सूं हर भांत री बैटिंग, बॉलिंग, फील्डिंग तो करै ई है, पण सागै विकेटकीपिंग भी करै। म्हैं झपिया म्हाराज रो फैन हूं। झपिया म्हाराज भी म्हनैं आपरै सागी काकै जित्तो अणूतो सन्मान देवै।

अबै पूठा मैन टॉपिक माथै आवूं। म्हैं झपिया म्हाराज नैं हालचाल पूछ्या। झपिया म्हाराज आपरी मोटरसाइकिल केजरी स्टाईल में यू-टर्न करी। वै यू-टर्न लेवण में ई उस्ताद है। मोटरसाइकिल खड़ी करी। नेड़ै ई पान री दुकान सूं गुटखै रो पाउच लियो। म्हारी उमर रो लिहाज करता थकां चरणधोक करी। म्हैं मुळक्यो। झपिया म्हाराज आपरो मोबाईल काढ्यो। आ तो म्हैं आप हुकम नैं बताय चुक्यो हूं कै झपिया म्हाराज री कमजोरी फोटू है। वां रै कुचमादी दिमाग मांय चौबीसूं घंटा फोटुवां ई घूमती रैवै। म्हाराज म्हारै सागै सेल्फी ली।

म्हैं भी राफां चवड़ी कर'र मुळक्यो। इण पछै म्हाराज नैं पूछ्यो कै अबार कांई मांय लाग्योड़ा हो? झपिया म्हाराज कन्नै ई पड़्यै अेक मुड्ढै नैं आपरै कानी खींच्यो अर उण माथै आपरी मोटी जूर तसरीफ धर दी। बापड़ो मुड्ढो जीव होवतो तो अवस चिरळावतो। खैर!

झपिया म्हाराज आपरी अबार री प्लानिंग बताई, ''काका! अबलकी अवार्ड झपण री खैचळ कर रैयौ हूं।''

म्हैं मुळक्यौ, ''अरे झपिया म्हाराज, थे तो धोबा भर-भर इत्ता अवार्ड झप न्हाख्या हो, अबै किसो अवार्ड रैयग्यो जिको थांरी निजरां नीं चढ सक्यो।''

म्हारी बात पूरी हुवण सूं पैलां ई झपिया म्हाराज कैयो, ''अरे काका, छोटिया अवार्ड तो घणा ई झप लिया। अबलकी मोटो अवार्ड झपण री जुगत मांय हूं। नेशनल अवार्ड।''

म्हैं हांस्यो, ''झपिया म्हाराज! मोटा अवार्डां री मोटी सैटिंगां हुया करै। बठै थांरै लोकल लेवल री दाळ नीं गळै।''

झपिया म्हाराज री अेक और खूबी तो म्हैं आपनैं बतावणी ई भूलग्यो। वै नेगेटिव बातां नै आपरै कन्नै फटकण ई नीं देवै। म्हारै कैवतां पाण पड्डूत्तर दियो, ''अरे काका!

सुभ-सुभ बोलो। गोटियां फिट करण मांय ई लाग्योड़ो हूं। बस, थे म्हारै माथै आसीस रो हाथ धरयोड़ो राख्या।''

म्हैं इण बात सूं राजी हुय'र वां रै माथै पर लाड सूं हाथ फेरयो। वां रै लाल-लाल टमाटर री भांत पळको मारता गाल माथै थपकी दी अर पूछ्यो, ''पण भतीज, म्हैं सुण्यो है कै अवार्ड मांय कमेटी हुवै। कमेटी मांय मेम्बर हुवै। वांरा वोट हुवै। वांनै राजी करणो पड़ै!''

झपिया म्हाराज हांसता बोल्या, ''काका। थांरो औ भतीज बादस्या काची गोट्यां कोनी खेली है। मैन-टू-मैन सेटिंग कर रैयो हूं। आधा परदा तो सैट कर लिया है, बाकी नैं ई आपरै चकारियै में लेवण री खैचळ कर रैयो हूं। इणी कारण अबार केई-केई जातरावां कर रैयो हूं।''

''स्याबास!'' म्हैं म्हाराज री पीठ थपकाई अर समझायो, ''देख झपिया! अवार्ड मांय केई बार भीतरघात हुय जावै। पैली भीतरघात करण आळां नै ईज सैट करणो जरूरी हुवै, नीतर पछै कात्यो-पींज्यो सै कपास हुय जावै।''

आ सुणतां पाण झपिया म्हाराज म्हारै कान रै नेड़ै आय'र होळै-सीक कैयौ, ''काका! म्हैं पतो कर लियो है। जकां सूं भीतरघात रो डर हो, वै तो लारला दो-अेक सालां मांय अवार्ड झप चुक्या है। वै भी म्हारै अवार्ड झपण मांय मदद कर रैया है।''

झपिया म्हाराज री बात मांय दम हो। म्हैं म्हारो भोड हिला'र हंकारो भर्यो। म्हाराज नचींता हा। वां रै संकळप री त्यागत म्हारै साम्हीं पळकै ही। वांनै पक्को पतियारो हो कै अबलकी नेशनल अवार्ड वांरो ई हुसी, इणमें कोई मीन-मेख कोनी।

बईर हुवती बगत झपिया म्हाराज फेरूं म्हारै चरणधोक करी।

म्हैं आसीस दी, ''भव झपिया उतिष्ठ, जागृत!''

◆◆

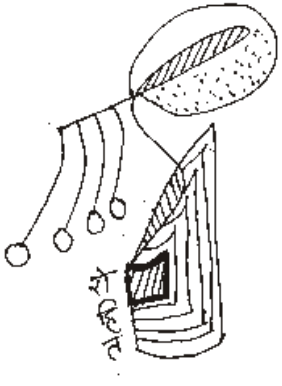

डॉ. मंगत बादल

लोक रै आलोक मांय लोककथावां

दुनियां री हरेक भासा अर समाज में लोककथावां रो आदूकाल सूं प्रचलन है। लोककथावां उण जमानै सूं लगोलग सफर करती आवै जद मिनख नैं आखर ज्ञान भी कोनी हुया करतो। अै कथावां अेक पीढी सूं दूसरी पीढी, अेक देस सूं दूसरै देस, अेक जबान सूं दूसरी जबान, अेक समाज सूं दूसरै समाज में भूंवती-भटकती, खुद रै मांयनै कितरा बदळाव समोंवती अर यायावरी करता थकां कितरी लंबी जातरा कर आपणी पीढी तांई पूगी है। आप टाबरपणै में लोककथावां आपरी दादी-नानी सूं चायै खुद रै घर में ई सुणी हुवै पण आं रै सफर रो इतिहास घणो जूनो है। अै आपणी पीढी तांई श्रुति परंपरा सूं ई आई है। औ भी कैयो जाय सकै कै अै वेदां जितरी ई जूनी है। आधुनिक जुग में विदेसी भासावां री देखादेखी भारतीय भासावां में भी लोककथावां नैं लिख'र सहेजणै री प्रक्रिया सरू हुई। अै लोककथावां आज भी उतरी ई लोकचावी अर महताऊ है जितरी आपरै सरुआती काल में हुया करती। केई लेखकां इण कथावां रो कीं रूप बदळ आंनै जुग रै अनुरूप ढाळणै री कोसिस भी करी है। बगत रै साथै बदळाव लोककथा री विसेसता है इण कारण आं रै लिखित रूप नैं लेय'र केई विद्वानां नैं अेतराज भी है। बांरो मानणो है कै पुराणा मनीसी भी तो आंनै लिखित रूप देय सकै हा, पण इण कारण कोनी दियो कै इण भांत करणो पुराणी परंपरा सूं छेड़छाड़ है। अै लोक री वस्तु है। लिखित रूप में आयां पछै आं में कोई बदळाव कोनी आ सकै जद कै लोकथावां तो बगतै नीर सरीखी हुवै। जियां ठैरियोड़ो पाणी गंदो हुय जावै बियां ई लोककथावां रै सरूप में भी ठैराव आ जावै। लोककथावां में जुग रै अनुरूप बदळाव बां रो फुटरापो है, कमी कोनी। आं नैं सिरफ टाबरां रै मनोरंजन रो साधन बतायनै हासियै

ठिकाणो :
शास्त्री कॉलोनी,
रायसिंहनगर-335051
मो. 94149-89707

 ISSN : 2320-0995

माथै सरकाणो ठीक कोनी, क्यूंकै असलियत तो आ है कै आं लोककथावां में मिनख सभ्यता रै विकास रो इतिहास भी गूंथिजेड़ो है, साथै ई अै किणी बगत मनोरंजन रो जबरदस्त साधन ही।

दुनियां रै हरेक देस अर भासा री लोककथावां रा घण्करा'क तत्त्व आपां नैं अेकसा मिलैला। जियां कै किणी राकस कानी सूं किणी राजकंवरी रो अपहरण, राकस री ज्यान किणी दूर जग्यां अेक पिंजरै में बंद सूवै में हुवणी, उडणखटोला, झरझरकंथा, जादूगर, भूत-पलीत, चुड़ैल-डाकण आद आं रा पात्र हुवै। पसु-पंछियां री मिनख सूं मिनख री भासा में बातां करणी भी आम बात है। म्हैं इण बात माथै गैराई सूं विचार कर्‌यो कै विकासवाद रै सिद्धांत माथै विस्वास करां तो सरुआत में मिनख हुय सकै पसु-पंछियां सूं बातां भी करतो हुवै। औ महज संजोग कोनी कै आंनै देख कदे-कदे तो लागै, अै सगळी लोककथावां अेक ईज क्षेत्र री है। आं में सिरफ पात्रां रा नाम ई बदळेड़ा लागै। बधती आबादी रै दबाव रै कारण आप-आपरी सुविधा मुजब मिनख दूर-दूर हुंवता गया, पण बै आपरै साथै अै लोककथावां भी लेयनै गया। देस अर काल रै मुजब आं कथावां में बदळाव हुंवता रैया। इण में स्थानीय विसेसतावां जुड़ण रै कारण अै मूळ सूं कीं अळगी दीखण लागगी, पण असली तत्त्व सागी रैया। लोककथा प्रस्तुत करणाळै री भासा अर कैवण रै अंदाज में भी फरक हुवण रै कारण बदळाव आंवतो गयो। आं रो लगोलग बिगसाव श्रुति परंपरा सूं हुंवतो रैयौ है। लोककथा प्रस्तुत करणाळो आपरी बुधी अर भासा रै मुजब भी उणमें कीं और जोड़ या घटा दिया करतो। इण भांत अै कथावां आगै बधती रैयी। क्षेत्रीयता, जातीयता, समाजिक वातावरण आद रो असर आं माथै पड़तो रैयौ। इण विसेसतावां रै चालतां ई पुराणै मनीसियां आंनै लिपीबद्ध कोनी करी।

हरेक भासा रो अेक लोक हुवै। कोई भी लोककथा उणरै आलोक में ई आपरो बिगसाव करै। उण क्षेत्र री परंपरावां रीत-रिवाज आद उण रा अटूट अंग बण जावै। केई विद्वानां रो तो अठै तांई कैवणो है कै लोककथावां में भी उणरै जुग रो जथारथ हुवै। उण जमानै में जद राजतंतर हुया करतो तो राजा निरंकुस हो। उणरो वचन ई कानून हुया करतो। उण जिको कर दियो या कैय दियो बो आखरी अदालत रो फैसलो हुया करतो। अपराध री सजा रै फळसरूप हाथ-पग कटवायनै चौरंगियो बणा देणो, सैंपरिवार घाणी में पिलवा देणो, सूळी चढा देणो, देसूंटो देणो आद उण जुग री दंड संहिता में हा। आं लोककथावां में कठै-कठै ई बांरी निरंकुसता अर जुल्म रो विरोध भी मिल जावै। असल में उण जुग में सीधो-सीधो तो राजावां नैं आदेस, निरदेस या सलाह दी कोनी जा सकती, इण कारण प्रतीकां में कैयो गयो है। आ अलग बात है कै आज रै श्रोता या पाठक नैं बै प्रतीक समझ में नीं आवै अर बो बांनै कोई चमत्कार, कारनामो या कल्पना समझ लेवै। उण जुग में राजा नैं भगवान रो प्रतिनिधी मान परजा उणरी हरेक आज्ञा रो पालण कर्‌या करती। राजा भी आपरी परजा नैं उलाद री भांत मानतो। जिको राजा अत्याचारी हुंवतो उणरो बरणाव भी आं

लोककथावां में किणी न किणी रूप में मिल ई जावै। कोई चायै कितरो ई तागतवर हुवै उण रो तोड़ कठै ना कठै मिल ई जावै। अैड़ै लोगां नै प्रकृति भी सजा देय देवै। केई लोककथावां अैड़ी भी है कै उणरै राकस पात्र री ज्यान सात समंदर पार किणी पींजरै में बंद सूवै में हुवै जिकै रै च्यारूंमेर सखत पहरो है। इण बात रो बेरो सिवाय उण राकस रै और किणी नैं कोनी, पण बो भी अेक दिन नसै में या घमंड में भरयोड़ो औ भेद अपहृत राजकंवरी नैं बता देवै। उण रहस्य नै मोमाखी बणेड़ो राजकंवर सुण लेवै। पछै बो सूवै नैं पकड़'र मार देवै जिकै सूं राकस भी मर जावै। अै जादातर कहाणियां सुखांत है। आं लोककथावां में लुगाई री माड़ी हालत अर रणिवासां में हुवणाळै कळेस रा चितराम भी मिलै। राजा किणी छोटी-सी बात माथै ई रिसाणो हुयनै किणी भी राणी नै दुहाग दे दिया करतो। लोककथावां में प्रेमकथावां भी घणी ई है। हरेक राजा रै अेक सूं जादा राणियां हुया करती। कैवण रो मतलब है कै सामरथवान लोगां में अेक सूं जादा ब्याह करणै रो रिवाज आम हो। राजा रात रै बगत भेख बदळनै परजा रा हाल-चाल जाणनै सारू महलां सूं बारै भी निकळ्या करतो। अैड़ी ई और घणी बातां है जिकै सूं तथाकथित जुग रै जथारथ रो बेरो लागै।

अै लोककथावां घणी मनोरंजक है। अेक जमानै में गांवां में तो अै मनोरंजन रो स्सै सूं बडो साधन ही। रोचक तो इतरी कै श्रोता अेकर सुणण सारू बैठग्यो तो बिचाळै छोड'र कोनी जा सकै। बीसवैं सईकै रै सातवैं-आठवैं दसक तांई गांवां रै हरेक घर में लोककथावां रो वरचस्व हुया करतो। गरमियां री रुत में तो गांव रै किणी घर री चूंतरी माथै या बाखळ में लोग भेळा हुय जावता अर बात कैवणियो बातपोस बात सुणावणी सरू कर दिया करतो। बातां रै बहानै घर-परिवार रै साथै-साथै रिस्तेदारी अर दुनियांदारी री भी बातां हुय जांवती। समाचार मिल जांवता। बां दिनां बातपोसां रो भी समाज में अेक खास दरजो हुया करतो। मसहूर बातपोसां नैं तो पईसा देयनै लोग दूर-दूर सूं बुलाया करता। राजा, नवाब, जमींदार अर रईस लोगां रा आप-आपरा बातपोस हुया करता जिकां री बै आरथिक मदद भी करया करता। बियां आपणै समाज में बां दिनां हरेक मिनख-लुगाई रै केई-केई लोककथावां याद हुया करती। बांनै बै आगली पीढी नै सूंप दिया करता। इण भांत लोककथावां अेक पीढी सूं आगली पीढी तांई चली जांवती। सियाळै मांय तो बात कैवणियां अर श्रोता किणी खाली जग्यां धूंई जगायनै उण रै च्यारूंमेर बैठ जाया करता। आधी-आधी रात या इण सूं भी देर तांई बातां चालती रैवती। केई बातां इतरी लंबी हुया करती कै केई-केई रात धारावाहिक रै रूप में चाल्या करती। आपनैं ध्यान हुवैलो अलिफ लैला री कहाणियां अेक मांय सूं दूजी निकळती गई अर इण भांत पूरी इकोतर सौ रातां तांई अै कहाणियां चाली। बादस्या नैं कहाणियां सुणण रो कोड हो। उण अैलान करयो कै बो कहाणी सुणणो चावै, पण बात जे रात नै बिचाळै खतम हुयगी तो मौत री सजा मिलैली। कहाणी कैवणियै अैड़ी कहाणी छेड़ी कै बात मांय सूं बात निकळती गई अर बात आगै

चालती गई। आखिर बादस्या नैं ई हार मानणी पड़ी। लोककथावां में कौतूहल तत्त्व इतरो जादा हुवै कै बो श्रोतावां नै बांध लेवै। अै विसेसतावां दुनियां री हरेक भासा री लोककथा में मिलैली। लोककथावां जे इतरी लंबी ही तो छोटी भी है। बांनै अेक ओळी री लोककथा कैयी जा सकै। बै कदे छोटी लोककथावां ही, पण आगै चालनै मिनख रै अनुभव में ढळती-ढळती कैवतां बणगी। जियां कै लेणो अेक न देणा दो, सूतां रै पाडा जामै, अंगूर खाटा है, टकै री हांडी फूटी अर गंडक री जात रो बेरो पड़्यो, सीख न दीजे बांदरा घर बया को जाय। कदे अै सीख सूं भरियोड़ी लोककथावां ही। लोगां री यादां में बसगी अर जबान माथै इतरी चढगी कै कैवतां बणगी। लोक में अैड़ी सैंकड़ूं नईं बल्कै हजारुं लोककथावां है।

लोककथावां में लोकरंजन रै अलावा अेक उम्मीद सूं भर्‌योड़ो भविस है। राजकंवरां, राजावां या कथावां रा बै पात्र जिका बीखा झेल-झेलनै सफळता हासल करता बै श्रोतावां रै मन में उम्मीद री अेक किरण जगांवता कै बै भी जे मैणत करैला तो बांनै भी सफळता मिलैली। बां दिनां काच रै डब्बै साम्हीं बैठ कैमरै सूं बणायोड़ा आदरस कोनी हा। लोककथावां रा नायक चायै कल्पना री दुनियां रा नायक हा, पण मिनख रै दुख-सुख रा साथी हा। कस्ट में घिर्‌योड़ै मिनख नैं चकवो-चकवी कोई दिसा दिखांवता। मर्‌यां पछै बां रो संघर्स देखनै पारबती नैं दया आ जांवती अर बा स्यो महाराज साम्हीं हठ करनै बैठ जांवती कै बै उणनै दुबारा सरजीवण कर देवै। स्यो महाराज आपरी चिटली आंगळी काटनै आपरै खून रो छींटो देंता तो मरेड़ो मिनख बियां ई उठ बैठतो जियां कोई नींद सूं जागै। कोई देवता बां माथै दया करनै कोई अैड़ी मणि दे देंवतो कै उणनै मूंडै में धरतां ई मिनख गायब हुय जावै। गायब हुयां पछै बै जुल्म करण वाळै नैं मजो चखांवता। कोई भूत, जिन्न या परी किणी सीधै मिनख माथै दया करनै झर-झर कंथा दे दिया करता जिकी नै झड़कावतां ई हेठां रिपियां रो ढेर लाग जाया करतो। आज आपां अै बातां जाणां कै बो स्सो कीं काल्पनिक हो, पण इण सूं टूटेड़ा-हारेड़ा मिनखां नैं कितरो संबल मिल्या करतो। अै कहाणियां बांनै अेक मनोवैज्ञानिक संबल दिया करती। आंरी छाप जद टाबर रै मन माथै पड़ती तो बां रै व्यक्तितव रो हिस्सो बण जाया करती। इण सूं बां रै मन में संघर्स करणै री तागत बापरती। बां रै चरित्र निरमाण में सहायक हुया करती। आ बात खुद-ब-खुद सिद्ध है कै कुदरत में कोई भी फालतू चीज कोनी रैवै। जद तांई उणरो उपयोग है उण बगत तांई ई बै रैवैली पछै आपी आप नस्ट हुय जावैली। जद ई तो कवि कैयो है—'प्रकृति के यौवन का श्रृंगार, करेंगे कभी न बासी फूल।' आप देख्यो है कै रूंख रै जद नूंवा पत्ता निकळण लागै तो पुराणा झड़ जावै। इणीज भांत अै लोककथावां है। जियां-जियां लोकमन रो बिगसाव हुंवतो जावै आं लोककथावां में बदळाव आ जावै। जे नीं आवै तो अै लारै छूट जावै अर आंनै जे कोई सहेजै नईं तो स्मृतियां में भी मर जावै।

अेक जमानै में ख्याल-तमासां रै साथै-साथै अै लोककथावां भी मनोरंजन रो अेक अंग ही। लोककथावां रो सै सूं सबळो पख बांरो भेळप करणै रो गुण है। बियां तो हरेक

कला मिनख नैं मिनख सूं जोड़ै अर उणमें मिनखपणै री तमीज पैदा करै, पण बीजी कलावां में कीं न कीं ताम-झाम री जरूरत हुवै बा बात कैवण में कोनी हुवै। अेक श्रोता रै आंवतां ई बात सरू करी जा सकै। बात कैवणियै री बात नैं जद साम्हीं सूं हुंकारो मिलै तो सुणावण वाळै में जोस बापरै अर उणमें रोचकता अर आणंद बध जावै। जियां फौज में नगारो बाजणै सूं जोधा में जोस उमड़ियावै बियां ई हुंकारो भरणै सूं बात कैवण वाळै में भी जोस भर जावै। जद ई तो कैवत चाली—फौज में नगारो अर बात में हुंकारो। हुंकारो भरणियो भी कोई श्रोता ई हुवै। बातपोस बात कैंवती बर आपरै ज्ञान रो पिटारो खोल देवै। ज्ञान, विज्ञान, लोक, शास्त्र, इतिहास, काव्य आद री उणनैं जितरी बातां याद हुवै बो उण में उंडेल देवै अर बात रोचकता साथै आगै बधती जावै। रोचकता री कमी तो नाटक, गीत, संगीत, रम्मत, व्रित आद में भी कम कोनी हुवै, पण इण सगळां में दरसकां या श्रोतावां री भूमिका मून रैयनै बैठ्या रैवण रै अलावा कीं कोनी हुवै जद कै बात में हुंकारो भरणाळै रो पूरो-पूरो इन्वाल्वमेंट हुवै। बात में किणी भांत रै साज-बाज या मंच आद री कीं जरूरत कोनी हुवै। बात में टाबरां, जवानां अर बूढां सगळां रो अेक साथै मनोरंजन करणै री खिमता हुवै।

लोककथावां में जितरो आकरसण ग्रामीण अर अणपढ लोगां रो हो उणरै साथै-साथै सिक्षित अर उच्च वरग भी आं सूं कम प्रभावी कोनी हो। फिल्मी दुनियां रो इण लोककथावां कानी खूब आकरसण रैयो है। इण कारण लोककथावां नैं लेयनै घणी ई फिल्मां बणाईजी है। म्हैं आ बात सिरफ आपणै देस सारू कोनी कैवूं बल्कै दुनियां रै हरेक देस आप-आप रै देस री मसहूर लोककथावां माथै फिल्मां बणा-बणायनै नाम अर दाम कमाया है। इण प्राचीन साहित्य रै अणमोल खजानै में अणगिण नगीना है।

आज आ घणी चिंता री बात है कै लोककथावां कांई सगळी लोककलावां रो होळै-होळै ह्रास हुयां जावै। लोक में जद आं रा कदरदान कोनी रैया तो लोक कलाकार भी भूख सूं बांथो करता-करता आपरो पेसो बदळणै सारू मजबूर हुयग्या। इण रो सै सूं घणो असर तो समाजिक भेळप माथै पड़्यो ई है, साथै ई टाबरां रै चरित्र अर व्यक्तितव निरमाण माथै भी पड़्यो है। पुराणै जमानै में जद दादी, नानी या कोई भी बुजरग जद टाबरां नैं कहाणी सुणांवतो तो पारिवारिक सामंजस्य अर समरसता रो वातावरण घर में बण्यो रैवतो। टाबर बुजरगां सूं सहजै ई बां रै अनुभवां सूं इतरो कीं सीख लेंवता कै उतरो किणी भी कॉलेज या स्कूल में सीखणै सारू कोनी मिलतो। आज रा नान्हा टाबर टीवी साम्हीं बैठनै कांई देखै अर कांई सीखै औ किणी सूं छानो कोनी। म्हैं आ तो कोनी कैवूं कै आपां बीतेड़ै बगत नैं पाछो ल्याय सकां, पण आवणाळी पीढी सारू आपां नै कीं न कीं तो करणो ई पड़ैलो कै बै देस अर समाज रा भला नागरिक बण सकै। बांनै राह बताणै रो फरज तो आपणी पीढी रो ईज है।

◆◆

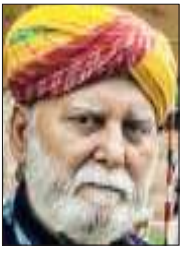

डॉ. आईदानसिंह भाटी

परमाणु रै पळकां बिच्चै

आ धरती, आ धूसर माटी
रंग अलेखूं
परबत घाटी।
धवळ-वेस मरजादा आळी,
जिण भुगती ही रातां काळी।
उण माटी में,
उण आंगण में,
बुद्धां री करुणा लैराई,
महावीर अहिंसा अरथाई,
मोरपांख गीताजी गाई।
उण माटी में
उण धरती में
व्याप गई ही अलख उदासी
बीखरगी ही पांख प्रेम री
अंधकार हो सत्यानासी
मरजादा पग व्हिया पांगळा
मिनखपणै नै सुरसा गिटगी
डाकीचाळो देस व्यापग्यो
अन्धकार अंतस ऊतरग्यो
गांव गरीबी, नागी नगरी
आदम रो जायो बण चकरी
आंख्यां साम्हीं
ओढ गुलामी
अन्नदाता री जै जैकारां
करतां-करतां जुग पळटाया।
जीवण री आपाधापी में
कूड़ आखरां री कापी में
एक सबद आंखियां खोली
मिनखजूण रो अरथ बतायो
हींयै बिचाळै में साच जगायो।
वै आंख्यां अपणापै आळी
पत्तां-पत्तां, डाळी-डाळी
गांव-गौरवां / ओरण डांडी
रिनरोही,मगरा अर घाटी
नगर-नगर / अर सैहर-सैहर में।
बांध लंगोटी / हाथां लाठी
आभै अर धरती नै नापी
ओढ देह पै अेक कापड़ो
बांध आप री कमर काठी
साबरमती में सुर लैराया
सोरठ री आंख्यां अरथाया
मधरी-मधरी बोली-बोली
डब-डब पाणी, करुण आंखियां
आजादी रो अरथ बतायो।
दसां दिसावां गूंजण लागी—
औ कुण आयो?
औ कुण आयो?
मुळक-मुळक मनभाणी आंख्यां
अपणापै री ऊजळ पांख्यां
अंधकार नै उण जग वौकारग्यो।

ठिकाणो :
8 बी/47
तिरुपति नगर, नांदड़ी
जोधपुर 342015
मो. 7597950129

उण गांधी सूं
उण आंधी सूं
सात समंदर रा सिंघासण
हळबळ-हळबळ करता आसण
धूजण लागा।
गोरां आळी उण सत्ता नै
संत नाप ली एक कदम सूं
सत्य अहिंसा सूं ललकारिया
उण वौकरयो अंधकार नै।
बम्बां री बळती लपटां में,
गोळ्यां री जबरी झपटां में,
दानवता री उण आंधी में,
वै दो आंख्यां—
सूरज री साखां निपजादी
लड़खड़ती लुळती काया में,
भारत भू रै हर जाया में,
भरदी 'वासंती आजादी'।
उण बोलां सूं
उण बाणी सूं
गंगजमन री छौळां उछळी
ब्रह्मपुत्र रो वेग बदळग्यो
चम्बल रै पांणी बळखायो।
सिंधु री लैरां अरथायो—
औ कुण आयो?
औ कुण आयो?
आंधी अर बोळी जगती में
औ किण रो परचम लैरायो?
पंचनद री धारा अरथायो—
औ कुण आयो?
औ कुण आयो?
कृष्णा कावेरी जस गायो।
औ कुण आयो?
औ कुण आयो?
छिप्रा रेवा तट बरड़ायो—
औ कुण आयो?
औ कुण आयो?
सात समंदर धज सूं बोल्या—
औ म्हारो उद्धारक आयो
काळी मानवता कुरळाई—
औ म्हारो रुखवाळो आयो
भूखी आंतड़ियां अरथायो—
औ म्हारो अपणापो आयो
सदी बीसवीं वध नै बोली—
गांधी-आयो / गांधी आयो।
आज उणी री पकड़्यां डांडी
बांध-बांध नै कमर काठी
झाल हाथ में उण री लाठी
उण 'वामन' री आ मानवता
भूखी-नागी नाठी आवै—
अंधकार री आंख्यां में खीरा उछाळती।
सिंघासण री दाढां बिच्चै हाथ घालती।
उण गांधी नै / उण वामन नै
आवण आळी अजरी पीढ्यां
आवण आळै अजरै जुग में
परमाणु रै पळकां बिच्चै
अंधकार
अर
इन्यावां बिच्च
अरथावैला
अपणावैला
गुण गावैला।

◆◆

ISSN : 2320-0995

ओम नागर

दो प्रेम कवितावां

रंग अर तूं

जद बी देखतो
गरियाळां में होळी का रंग
देहळ पै ऊभी निजर आ जाती तूं।
कै जस्यां ई खडूंगो साम्है सूं
ऊलाळ देगी मुट्ठी भर गुलाल
अर म्हूं
गाबां पै हैरतो रह जाऊंगो थांरा रंग।
म्हारी असमानी कमीज देख'र
गुलाबी हो जावै छौ थांरौ उणियारो
सगोस में नैणां की कोर सूं रळक जावै छो काजळ
थांरा रंग-ढंग देख'र छांनै-छांनै
चुगल्यां करबा लाग जावै छा बिछिया
ओळ्यूं छै थंई वां होळी ?
जद चमटी भर गुलाल सूं भर दी छी थांरी मांग।
फेर अकसमचो
आंगणां में ऊभी भायल्यां नै
पटक दिया छा घणकरा रंग
धूलण्डी का धूमधड़ाका में बी
भींत पै गडी रह'गी छी थांरी आंख्यां।
भायल्यां कांई गी आरसी साम्हीं
बावळी की नांई हैरती रही

ठिकाणो :
साहित्य अकादेमी
क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई-मराठी ग्रंथ
संग्रहालय मार्ग, दादर (पूर्व)
मुंबई 400014
मो. 9460677638

थांरी मांग में म्हारै हाथां भरकी
चमटी भर गुलाल।
आज बी
होळी का रंगा में घुळी छै थांरी ओळ्यूं
बसंत का फूलां में घुळी छै थांरी सौरम।
जीं रंग में ढळ जावै छै तूं
ऊं रंग में दमक जावै छै
म्हारी जिनगाणी को उणियारो
थांरी प्रीत को उणियारो।

प्रेम करबा हांळा की बातां

न्हं बीतती बतायी
प्रेम करबा हांळा की बातां
पहरा तांई असी कांई बातां करै छै
प्रेम करबा हाळा।
प्रेम करबा हाळां की मनमान सारी बातां में
कतनी'क बातां होवै छै
काम की बिना काम की।
कतनी'क लांबी होवै छै
प्रेम करबा हाळां की सींग-पूंछ
होवै बी कै न्हं होवै ये तो वोई जाणै
सांच अर झूठ को कतनो सतभखेलो
बगत की चांरणी में चांळता रैवै छै
मुट्ठी दो मुट्ठी बाळू।
प्रेम करबा हांळा की बातां
चकवा-चकवी की भासा में
यां फेर कागलां की कांव-कांव छै बस
उस्यां तो आखा मलख की भासावां में
स्यारकी ई होवै छै प्रेम की बोली
पण अेक दिन बातां ई बातां में घड़ लेवै छै
आपणी नुयी तथाक भासा।
प्रेम करबा हाळां की बातां को बहीखातो
घणो लूंठो
मांडता चल्या जावै छै
माथा सूं माथो जोड़्यां जागा की पोथी।
कांई कोई जागो स्वामण अनाज कै सांटै
बांचतो रेवैगो यांकी जूण-जातरा
फेर बी तो रह ई जावैगी
बातां थोड़ी-घणी बातां
मांडता-मांडता
बांचता-बांचता
प्रेम करबा हाळां बातां ई बातां में
धोळा-दुपहरा तोड़ लावै छै तारां
आथणी आडी सूं उगा दे छै सूरज
हज्यारां का फूलां में धर दे छै मोगरो
हमेस आपणी नरम हथेळ्यां सूं
समेटता रेवै छै
गरियाळा में बिखरी आपणी निरमळ हांसी।
प्रेम करबा हाळा
मूंडा सूं कम आंख्यां सूं करै छै बदती बातां
सैण ई सैण में भड़ा ले छै
मिलण की जुगत
पण कदी-कदी डरफ सूं बी
भर जावै छै काळज्या।
प्रेम करबा हाळा
कांई साच्याई जीत लै छै जुद्ध
या फेर अठी बी
बगतसर आ'ण ऊभा होवै छै
केई सिखंडी
पण ये कुण कन्हाई कै भरौसै
करता रैवै छै प्रेम
या तो प्रेम करबा हाळा ई जाणै छै।

◆◆

ISSN : 2320-0995

सुनील गज्जाणी

टिब्बा म्हारो माण

रेतीला टिब्बा
म्हारी छिब
म्हारै हियै मांय
रच्या-बस्या!
टिब्बा, सैनाणी
टिब्बा म्हारो माण
टिब्बा जकै सारू म्हनै गीरबो है!
टिब्बा फगत बेळू रा धोरा नीं है
धोरा कवळा-कवळा
किणी हेत भांत!
धोरा, म्हारो माण
धोरा परोटै है
मानखै नै
अर मानखो
पग-पग लगोलग बाड़ै है
उणनैं आपरै सुवारथ मांय!
टिब्बा मन भावता
सागीड़ा डीगा-डीगा
मार न्हाख्या धोरा
निरा ई म्हारै गांव रा
बा जमात
जिकै रै हियै मांय हेत नीं हो
बै मिनख जिकै नैं हेत नीं है
आप री संस्कृति सूं

ठिकाणो :
सुथारां री बडी गवाड़
बीकानेर 334005
मो. 9950215557

अै धोरा
अै टिब्बा
फगत बेळू नीं है
म्हारो छुटपणो है
जिकै मांय
म्हें रम-रम'र बध्यो हो!

इण टिब्बां री
आवण आळी कैड़ फगत
सैनाणी सोधैला
पोथ्यां मांय ओळ्या बांचता
आ संस्कृति जद बचसी
जद हियै मांय हेत जागसी

जियां थरपा हां
किणी रोड़ै माथै आपां
माळीपानो चेप'र उणनैं
देवी-देवता धोकण सारू
उण भांत इण पेटै ई कोई
आस्था होवणी चाईजै
कै बै सोनलिया धोरा
सूपणो है जियां रो तियां
अेक केड़ सूं दूजै केड़
जियां सूपां हां आपां
आपणै घर रो जूनो पट्टो!

म्हारा सुपना

म्हारा सुपना
म्हासूं दुभांत करै है
नींद मांय दीसै सै किसा ई
अर साच होवै किसा ई!
सुपना साच लारै भागै
अर साच जिंदगाणी रै
जंजाळ मांय फस्योड़ो
रुध्योड़ो!

हियै रो हेत

बा आपरी आंख्यां सूं
सो-कीं कैय दियो
टप-टप टपकै हा टोपा
उण आंख्यां सूं
बा फगत मून हुयोड़ी बैठी ही
मूंडै सूं कोई बाफ नीं काढी
हियै रो हेत
आंख्यां सगळी चवड़ी कर दीनी!

हेत

हेत
कदैई उगत्यै सूं नीं होवै
हेत
काळजै मांय निपजै जणै ई होवै!

जिंदगाणी

जिंदगाणी
चोकै-बासै जित्ती ई
नीं होवै
पण इणसूं
निरवाळी भी नीं होवै!
◆◆

ISSN : 2320-0995

सीमा राठौड़ 'शैलजा'

हिवड़ो है अधीर

गोरड़ी करै सोळा सिणगार, हिवड़ो झोला खावै चार

झीणो-झीणो घूंघटियो, गजबण नैणां तीर
नैण कटारी लागी काळजै, गयी हिरदो चीर
है माथै थारै राखड़ी, अर बैंया बाजूबंद
हिवड़ो मारै हिलोरां, बायरो चालै मंद-मंद
पगल्यां पाजेब बाजणी, मैंदी राच्या हाथ
जिवड़ो बसै थारै चूड़लै, रमस्यां थारै साथ
गोरड़ी करै सोळा सिणगार, हिवड़ौ झोला खावै चार

नैणां काजळ री रेख है, होठ थारा लाल
पीळो-पीळो घाघरो, ओढ कसूंमल चीर
म्हारै मनड़ै थे बस्या, मोवणो चूड़लौ चीर
धोरां सो तपतो हियो, जोवां थांरी बाट
बेगा पधारो मिरगानैणी, बरसावो हेत री छांट
म्हारै जीव री जड़ी, थे मत ना बढ़ावो पीड़
बुला ल्यावो सखी, म्हारो हिवड़ो हुयो अधीर।

ठिकाणो :
वार्ड नंबर-16,
कानोड़िया अस्पताळ कनै
मु. पो. मुकुंदगढ़
जिला -झुंझुनूं
राजस्थान 333705
मो. 7906044832

म्हारी क्यारी-सखी प्यारी

हरियल तोता सी है क्यारी,
प्यारी सखी घणी म्हारी,
हरी-भरी हरियाळी,

ISSN : 2320-0995

म्हारी सखी भोळी -भाळी,
मनमोवणी सगळी क्यारी
लागै जिवड़ै सूं प्यारी,
मनड़ै री सगळी बातां करल्यूं,
थानै सखियां नै बाथां भरल्यूं,
मनड़ै री पीड़ सुणै सगळी
हंस-हंस घणी बतळावै
कदै साथै आंसूड़ा ढुळकावै,
तो कदै मुळकै कदै सरमावै।

तन-मन री हुवै बातड़ल्यां,
बोझो-बोझो, पत्त्यां-पत्त्यां,
हेत सूं नाचण लागै,
म्हारी आंख्या में भी
नूंवी चमक आ जावै,
मनड़ो खिल-खिल जावै।

बतळावां इण सखियां सूं जद,
भूल जावां जगत री हर पीड़,
सखियां म्हारी हरियल तोता सी,
देख सखी प्यारी नै,
मनमोवणी क्यारी नै,
म्हे भी आनंद सूं
हरी- हरी हो जाऊं।

कविता री चाह

चाह नीं है म्हैं छप ज्याऊं,
रद्दी में फेर लुक ज्याऊं,
चाह नीं है मोटी पोथी रा,
पानड़ां तळै दब ज्याऊं,
चाह नीं है मंचां रै माथै,
जोर-जोर सै गायी ज्याऊं,
सोभा बणूं जळसै री,
घणी भाग्य पै इठलाऊं।

मांडो म्हांनै हिवड़ै री कलम सूं,
भावां री स्याही ढुळकावो
सरल-सहज ही मांडो म्हांनै,
बिण छंदां रै लाग लपेटै
छप ज्याऊं जणमाणस में
काळजयी कविता बण ज्याऊं
देसप्रेम री लहर जगाऊं
क्रांति री ज्योत जळाऊं
मां भारती रो तिरंगो बण लहराऊं।

मोरपांख में रमी राधा

मोर मुगट माथै धरयो,
प्रीत में राधे थारै नाथ
मोर पांख सूं तन ढांप लियो,
सोवै तकियो बणा हाथ।

बिछा दिया पांखड़ा जाणूं,
मोर सगळी धरा पर आज
पुराणी प्रीत में झूम रही,
जाणूं लाडली राज।

रूप थारो घणो मोवणो,
लागै राधे सरकार
करूं निछरावळ इण पर,
म्हैं सगळो संसार।
◆◆

ISSN : 2320-0995

बाल-कविता

डॉ. शारदा कृष्ण

तूं थारै घर जाव करोना

तूं थारै घर जाव करोना,
म्हे जावां स्कूल

नीं खेल्या नीं कूद्या भाया
घर ई घर में हुया पराया
बारै पग-पग पसर्‌यो खतरो
नानी-दारदी हटक सवाया
पीटी डम्बल लेजन भूल्या
गया प्रार्थना भूल
करोना म्हे जावां स्कूल

ऑनलाईन क्लासां री कळझळ
सर मैडम जी बोलै अड़-बड़
नेट प्रॉब्लमां नाड़ी टूटै
लिंक जुड़ै नीं, टूटै पळ-पळ
टेब फोन कम्प्यूटर माथै
होमवर्क अधझूल
करोना म्हे जावां स्कूल

तूं थारै घर जाव करोना
म्हे जावां स्कूल।

ठिकाणो :
आशादीप, पिपराली रोड, सीकर (राज.)
9928743194

बीरा लेवण बेगो आई

इण आंगणियै जलमी जाई
सुण बीरा म्हैं नहीं पराई

काका-बाबा री बाखळ में
झोळी भर-भर लिछमी ल्याई

मोत्यां बिचली लाल लाडली
घण लाडकड़ी हूं म्हैं बाई

तीज-तिंवारां रंग भरूं म्हैं
आंगणियै री ओप सवाई

तिलक लगाऊं करूं आरतो
बांधूं राखी नेग चुकाई

चढ डागळियै बाट उडीकूं
बीरा लेवण बेगो आई।

◆◆

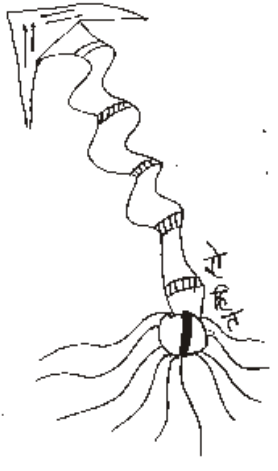

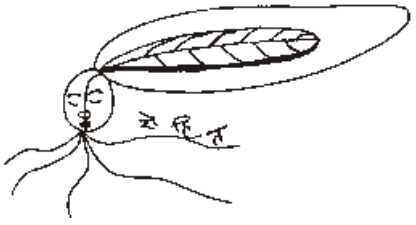

आव बेलिया पेच लड़ावां

आव बेलिया पेच लड़ावां
बै मारया बै काट्या गावां

ऊंची मैड़ी चढां अटारी
चरखी डोर पतंग उधारी
बाळ परो परदेसी मांझो
हाथ सुंताई रील सुधारी
पंछी पंथी खैर मनावां
आव बेलिया पेच लड़ावां

उडती पतंग अकासां जासी
कटतां पाण धरा आ जासी
हवा आपरै बस कर लेसी
डोरो छूट तिंवाळा खासी
भरां उडारी गोत लगावां
आव बेलियां पेच लड़ावां
काणे-काण राखजै मतना
ढील अणूती दीजै मतना
डोर हाथ में साध राखजै
घणी गुचळकी भरजै मतना
सर-सर सरणाट मचावां
आव बेलिया पतंग उड़ावां।

◆◆

ISSN : 2320-0995

दीनदयाल शर्मा

दस हाइकू

अेक
बेटी आयगी
थूं क्यूं हुवै बेचैन
रब री देन।

दोय
पांचूं लाडला
सै रैवै दूर-दूर
ओळ्यूं है साथै।

तीन
बडेरो रूंख
अजे ई करै आस
आयसी पाखी।

चार
रगती रिस्ता
मदद मिली कोनी
हालत खस्ता।

पांच
आ कैड़ी प्रीत
सोग मांय मिठायां
निभावै रीत।

छह
छोटी है सोड़
मिणत करै कोनी
पगां नैं मोड़।

सात
रो ना अेकलो
मिल'र सै करल्यां
मन हळको।

आठ
खून सूं लिख
मनड़ै री सै बात
मिलै सौगात।

नौ
ना कर रीस
नुकसाण हो सकै
दांतां नैं पीस।

दस
जग रो सार
दुखी आखो संसार
कर बिच्यार।

ठिकाणो :
10/22 हाउसिंग बोर्ड
हनुमानगढ़ जं. 335512
मो. 9414514666

ISSN : 2320-0995

प्रहलाद कुमावत 'चंचल'

सुरंगो राजस्थान

सगती भगती रो मेळ जठै, हिवड़ै में साचो सगपण है।
इण राजस्थान रंगीलै रो, थे सुणो सांतरो वरणण है।।

बंका केसरियो मांडणियां, जौहर री ज्वाला पदमण है।
राणा, दुर्गा सा जोध जबर, भालै-खांडै री खणखण है।
हाड़ी राणी री अमर कथा, पन्ना रो अठै समरपण है।
मुंड कट्योड़ा रुंड लड़ै, गाथावां गूंजै कण-कण है।
इण राजस्थान रंगीलै रो, थे सुणो सांतरो वरणण है।1।

पाबू, हड़बू जी, रामदेव, गोगा, मेहा रा दरसण है।
सतवादी सूरा तेजा री, देवळियां पूजै जण-जण है।
कोळायत गळता बेणेसर, पुष्कर रो न्हावण तरपण है।
करमां-मीरां, जम्भेसर जी, दादू री वाणी मुगतण है।
इण राजस्थान रंगीलै रो, थे सुणो सांतरो वरणण है।2।

ओसियां किराडू रणकपोर, में मकराणै री चमकण है।
आमेरां राज-विलासां में, आ शीशमहल री दमकण है।
या चांद-बावड़ी राज म्हैल, सै शिल्पकला रो दरपण है।
जिणनैं निरख्यां सुख पाय नैण, म्हारै पुरखां रो सिरजण है।
इण राजस्थान रंगीलै रो, थे सुणो सांतरो वरणण है।3।

ठिकाणो :
बस-अड्डै रै कनै
पोस्ट ऑफिस रै साम्हीं
ग्रा. पो. जाहोता
जयपुर-303701
मो.9887873315

 ISSN : 2320-0995

सैंणी-बींजा, मूमळ-मेंदर, ढोला री प्यारी मरवण है।
मिसरी घोळेड़ी मिठबोली, रागणियां गावै जण-जण है।
सिरमोड़ बोरलो तिम्मणियो, झणकै पायल री झणझण है।
सुबरण रा सोहवै बाजूबंद, पाणी नैं जाती गजबण है।
इण राजस्थान रंगीलै रो, थे सुणो सांतरो चितरण है।4।

असर अस्यो अंग्रेजां आळो

असर अस्यो अंग्रेजां आळो, आपां 'के' सूं 'के' होग्या।
जाणै कद चुपचाप खिलूणां, चाबी हाळा 'म्हे' होग्या।।

मायत पूजण रीत अठै तो, जुगां जुगांतर ही भाई।
ऊठ सुंआरै दरसण करणां, पगां लागणा नितका'ई।
धरती पै भगवान जका है, बै मायत अब 'डे' होग्या।
असर अस्यो अंग्रेजां आळो, आपां 'के' सूं 'के' होग्या।।

दिन भर थाक्या, रात्यूं जाग्या, सै मनसा पूरी थारी।
ज्यो थांनै दस-दस नैं पाळ्या, दोय जीव होग्या भारी।
'ओल्ड एज हाउस' में घाल्या, एडवांस ही 'पे' होग्या।
असर अस्यो अंग्रेजां आळो, आपां 'के' सूं 'के' होग्या।।

नर-नारी को पतो न चालै, तन का कपड़ा लत्ता सूं।
मुछमुंडा तो भला कह्या पण, कठै मानिया अत्ता सूं।
विधना नैं झूठी कर दीन्ही, छोरा छोरी 'गे' होग्या।
असर अस्यो अंग्रेजां आळो, आपां 'के' सूं 'के' होग्या।।

'चंचल' व्हया नकल में मौ'दा, सैंसकार सै भूल गिया।
मिनखपणै रा डोळ पुरबळा, दिन-दिन दूणा डूब रिया।
कह्यी सुण्योड़ी अेक न लागै, नकटा-बूचा सै होग्या।
असर अस्यो अंग्रेजां आळो, आपां 'के' सूं 'के' होग्या।।

◆◆

डॉ. रेणुका व्यास 'नीलम'

केसर री क्यारी मांय बादळां सूं बतळावण

(लारलै अंक सूं आगै)

पहाड़ां रा मिनख लंबा-गोरा अर मजबूत हट्टी रा हुवै। फर-फर करता पहाड़ां पर चढ जावै अर खट-खट करता घाट्यां उतर जावै। तीखी नाक अर कंजी आंख्यां। ढीलो-गरम कुरतो (फिरन) पैहरै। बीं रै मांयनै कांगडी (खास तरै री बोरसी) राखै, जकी बांनै माइनस तापमान में भी गरमी देवण रै काम आवै। अठै कश्मीरी भासा बोलीजै। बै हिंदी नैं समझै अर जरूत होवण पर बोलै भी है।

कश्मीर री लुगायां रो तो कांई कैवणो! बै तो जाणै रूप रो सैलाब ई हुवै। कोई लांबी, छरैरी तो कोई माखण रै गोळै जिसी गोळमोळ अर गुदगुदी। सगळी गोरीगट्ट। सेब बरगा गुलाबी गाल, पतळा-पतळा फूलां री पाखंडी जिसा होठ अर सुंदर नैण। जम्फर-सलवार पैहरै अर अरब देसां री लुगायां जियां माथै पर दुपट्टो बांधै, जको बांनै घणो ई सोहवै। केई बुरको भी ओढै। बांरो घणो-सो सरीर ढक्योड़ो रैवै।

म्हारी मुलाकात केई महिला शिक्षकां सूं हुयी। बंतळ मांय म्हनैं बै सगळी समझदार, सजग अर सोझीवान लागी। मन नैं ठावस होयो कै चालो कस्मीर रा टाबरिया समझदार हाथां मांय है।

कश्मीर रै लोग-लुगायां नैं म्हे आंख्यां फाड़-फाड़'र देख्या। उणरी आंख्यां अर बोली सूं म्हे उणां रै मन नैं जोवण री कोसिस करी, पण हरेक मिनख म्हांनै दूजै मिनखां जियां रोजी-रोटी री चिंत्या, घर-परिवार री भलाई अर सांति री चावना सूं भर्योड़ो लाध्यो। याद आई म्हांनै मिनखाचारै रै हामी लोगां री बातां कै आम इंसान तो आपरी जूण पूरी करण में ई अळूझ्योड़ो रैवै। आप रै स्वारथ में आंधा लोग बांनै गुमराह करै अर असांति फैलावै। असांति री आड़ मांय इण तरै रा स्वार्थी लोग आपरो उल्लू सीधो

ठिकाणो :
'श्रीकृष्णम्'
सीताराम द्वार रै मांय
बीकानेर (राज.)
मो. 9414035688

 ISSN : 2320-0995

करै अर मार पड़ै गरीब, अणपढ अर निबळां मिनखां पर। आखी जातरा मांय म्हैं मैसूस करयो कै पहाड़ां माथै जीवण भोत दोरो हुवै। पूरी तरियां परकत रै अधीन! परकत राजी तो मिनख सोरो अर परकत नाराज तो मिनख परेसान! आखी घाटी में सियाळै रा चार-पांच मास घणा ई दोरा हुवै। बरफबारी सूं मारग बंद हुय जावै। स्कूल-कॉलेज, काम-धंधा सै बंद हुय जावै। आम आदमी नैं तो रोटी-पाणी रो ई तोड़ो हुय जावै। इण कारण ई गरीबी अर बेरुजगारी अठै री सैं सूं बडी समस्या है। स्वारथी लोग इण गरीबी, बेरुजगारी अर ठालेपण रो फायदो उठावै अर जवानां नै गुमराह करै। म्हनैं लागै कै देस अर घाटी रै विकास वास्तै गरीबी अर बेरोजगारी री इण समस्या रो कोई पक्को इलाज होवणो भोत जरूरी है।

आगली भोरमभोर म्हे 'गुलमर्ग' चाल्या। गुलमर्ग बारामूला जिले में पड़ै। गुलमर्ग म्हनैं 'पुसबां रो मैदान' कस्मीर में मैदान नैं 'मर्ग' कैयीजै। सीधी सपाट सड़क रै आसै-पासै छोटा-छोटा गांव अर हरियल झाड़ां री लांबी कतारां चोखी लागै ही। पहाड़ी ढालां माथै चीड़ अर देवदार रा रूंख मारग री सोभा बधावै हा।

कठैई तो लीलै आभै मांय नान्हा-नान्हा धोळा बादळिया रूई रै चूंखां जियां बिखरयोड़ा हा, तो कठैई बादळिया अेक-दूजै रो हाथ झाल्यां सर-सर बैवै हा। कठैई अेक-दूजै रै कांधै चढ्योडा धींगामस्ती करै हा।

समंदर तळ सूं 2730 मीटर ऊंचै इण हिलस्टेशन में घुसण सूं पैला म्हांनै ड्राईवर रै कैयां मुजब भाड़ै माथै मोटा-गरम कपड़ा अर रबड़ रा जूता लेवणा पड़्या। रबड़ रा जूता ठंड सूं तो बचाव करै ई है, कादै में फिसळण सूं भी बचावै।

पहाड़ां रै मौसम रो मिजाज तो मिनख रै मिजाज सूं ई बेगो पलटो खावै। मौसम अेकेदम बदळग्यो। छोटी-छोटी बुंदक्या गाडी रै बोनट, बाग- बगीचा अर सड़कां माथै नाचण लागगी। ठारी बधगी।

गुलमर्ग में गाडी स्टैंड पर ई छोडणी पड़ै अर पाळा-पाळा बैवणो पड़ै। म्हे पाळा-पाळा बैवै हा। ठंड रै कारणै तन मांय कंपा बधती जावै ही। बिरखा चालू ही। गुलमर्ग रो बडो जूर थाळी जिसो हरी-मखमली घास रो मैदान बिसेस देखण जोग ठौड़ हो। खासो बडो मैदान कठैई साव सपाट अर कठैई ऊंचो-नीचो हो। बीच-बीच मांय साफ झक पाणी रा ताळ, बां पर छोटा छोटा काठ रा पुल अर नान्हीं-नान्हीं झूंपड़्यां परीलोक-सो दरसाव पैदा करै ही। कैवै कै अठै पिक्चरां री सूटिंग भी होया करै। म्हे अठै 'जै-जै शिवशंकर' फिल्मी गीत आळै शिव-मिंदर रा दरसण ई करिया। कैवै कै सियाळै मांय गुलमर्ग स्कीइंग अर गोल्फ रो मानीजती ठौड़ हुय जावै। दिसंबर में बरफ पड़्यां पछै, स्कीइंग अर गोल्फ रा प्रेमी दुनिया भर सूं अठै आय ढूकै। दुनिया रो सै सूं बडो गोल्फ कोर्स अठै ई है।

गुलमर्ग सूं 'गंडोला केबल कार' मांय बैठ'र और ऊंचै पहाड़ां पर भी जाईजै। म्हे भी ऊपर जावण वास्तै टिगट लेवण खातर लैण मांय लागग्या। मुल्कां बरगी भीड़ ही। ठारी इत्ती कै गरम कपड़ा मांय भी दांत कटकटावै हा। टाबरां रा होठ लीला पड़ग्या। चाय पाय-पाय'र बांनै गरम राख्या। धंवर इत्ती तगड़ी कै साम्हीं ऊभो आदमी अर दरसाव नीं सूझै।

जून रो महीनो आ कड़कड़ी ठारी! सोच'र ई मूंडै पर मुळक आयगी। म्हैं सोच्यो—इण टेम म्हारै मरुदेस मांय तो बळती लूआं बाजती होवैली। बाळू रेत रा धोरा तवै जियां तपता होवैला। मिनख-जिनावर आपरो जीव लैयनै छिंया अर बादळां री आस में आभै नैं ताकता होवैला। पण अठै तो माइनस रो तापमान! पाणी भरयोडा बादळिया म्हांनै भिगोवता म्हारै ऊपर कर आवै-जावै हा। तीन-चार घंटा बाद भी जद टिगट खिड़क नीं खुली तो समाचार आयो कै ऊपर बरफ रो तूफान आयोड़ो है, जकै सूं आज के बल कार कोनी चालै। म्हे भारी मन सूं खावणो-पीवणो कर'र, चीज बस्त मोलावता अर अठीनै-बठीनै घूमघाम'र पाछा बावड़्या।

कपड़ै री दुकानां माथै गरम पस्मीनै रा दुसाला, कांबळां, सूट,फिरन अर कोट बिकै हा। इसा गरम कपड़ा मैदानी इलाकै मांय दोराई सूं अर मूंघा मिलै। सेना रा जवान जनता री हर परेसानी रो समाधान करण नै लाग्योड़ा हा। म्हे बांसूं मुलाकात करी अर बांनै धन्यवाद दियो।

गुलमर्ग सूं घुड़सवारी कर'र ऊपर थाजिवास ग्लेशियर अर जोजीला दर्रे भी जाईजै। पाछा बावड़ण री वेळा मांय थोड़ी ताळ नै बादळ छंट्या अर आभो साफ हुयो तो अचाणचक साम्हीं बरफ सूं ढक्योड़ो धोळो धप्प जबरो ऊंचो पहाड़ निजर आयो। आणंद अर इचरज सूं काळजो धक्क रैयग्यो। डील मांय झुरझुरी दौड़गी। आंख्यां अर गळो गळगळो हुयग्यो—हे रामजी! इत्तो सोवणो रूप! म्हारी तो जियां जातरा ई सुफळ हुयगी! धिन माँ परकत! धिन थारी माया! इयां लागै हो जाणै कोई साधु धोळा धारयोड़ो, आपरी पूरी गरिमा सागै जोग रमायोड़ो बिराजै है। सांत, मून, तिरपत अर आप में मस्त!

पाछा बावड़्या जणां हाट-बजार खुल्योड़ो हो। ठौड़- ठौड़ माथै स्ट्रॉबेरी, चेरी रा डब्बा लियां दुकानदार सड़क रै पसवाड़ै ई बैठ्या हा। दुकानां माथै सूखा मेवा—बिदाम अर अखरोट सज्योड़ा हा। म्हे रास्तै मांय सेब अर बिदामां रा बडा-बडा बाग ई देख्या।

आगलै दिन म्हानै 'पहलगाम' जावणो हो। पहलगाम मानै 'गडरियां रो गांव'। सागरतळ सूं 2130 मीटर ऊंचै पहलगाम रै रास्तै मांय क्रिकेट रै बल्लां रा बोळा कारखाना दीख्या जठै ढेर रा ढेर बैट सज्योड़ा हा। पोम्पोर में केसर रा खेत हा। सगळा खेत धोळा अर जामनी केसर रै पुसबां सूं लदफद हा। ठौड़-ठौड़ माथै सेना रा जवान तैनात हा। जकै रास्ते माथै म्हे चालै हा, बो रास्तो अमरनाथ जातरुआं रो मारग हो।

पहलगाम मांय म्हे अेक सरदारजी री होटल मांय ठैहरया। इण इलाकै में घणकरा हिम्मत रा हेड़ाऊ सिक्ख आपरै घर-परवार, जमीन अर जायदाद सागै पूरे हौसलै सूं बसै। आप ई रैवै अर दूजां निबळां रो ध्यान ई राखै।

होटल सूं दूजी गाडी मांय म्हे चंदनबाड़ी पूग्या। घाटी में पाळा चाल्या। बिरखा बरसै ही। म्हे छतरी लैयनै रबड़ रा जूता अर मोटा कोट पैरयोड़ा टगमग-टगमग चालै हा।

दूर सूं ई पहाड़ां रै ढाळां माथै बरफ जम्योड़ी दीखै ही। असल में बै पहाड़ी ढाळ कोनी हा। बै तो जम्योड़ा ग्लेशियर हा। अेकै खानी ग्लेशियर रै नीचै सूं अेक तीखी अर मोटी पाणी री धार खळखळ करती बैवै ही। बीं नै लोग शेषनाग री धारा बतावै हा। धार

 ISSN : 2320-0995

रो पाणी इसो ठंडो हो कै हाथ घालां तो हाथ ई सूनो हुय जावै। धार री गति अर खळखळ मन मांय भय उपजावै ही। ग्लेशियर रै दूजै खानी पगांथिया हा, जका अमरनाथ जातरुवां रै काम आवै। कठैई-कठैई मारग में लारलै साल रै जातरुवां वास्तै बणायोड़ा अर अबै उजाड़ पड़्योड़ा भेळा जाझरू अर न्हावणघर दीसै हा। कांई ठाह कित्तै ई घंटा म्हे बरफ रै गोळां सूं खेलता रैया। बरफ पर दौड़ लगावता अर फिसळता रैया। टाबरिया राजी हा अर म्हे मस्त! पाछा बावड़्या जणै रास्ते मांय घणा ई पिकनिक स्पॉट अर रिजोर्ट दिख्या। होटल आवतै-आवतै गरम कपड़ा रै बाद भी म्हैं ठंड सूं खड़्खडीजगी। धूजणी छूटगी। ताव चढग्यो। चाय सागै पैरासिटामोल ली अर ओढ'र सूती, जणै घंटा दो घंटा बाद सूई होयी।

दिनूगै म्हानै जम्मू वास्तै टुरणो हो। आगलै दिन री बीकानेर वास्तै म्हारी टिगट ही। ब्हीर हुवण रै बखत आसमान साव साफ हो। खुल्लै आभै मांय दूर बरफ रो मुगट धारयां हिमाळै री चोटी चमकै ही। जाणै म्हांनै बिदाई देवण नै परगटी हुवै। म्हे सगळा मंतरायीज्योड़ा ज्यूं ऊभग्या। आंख्यां जाणै पलकां ई झपकावणो भूलगी। किणी रै मूंडै सूं अेक बोल ई नीं फूट्यो। म्हे सगळा चुपचाप आंख्यां रै रास्तै हिमराज नैं हिवड़ै मांय उतारै हा। म्हैं हाथ जोड़'र हिवड़ै री सगळी लुळताई सागै हिमराज नैं निवण कर्‌यो अर कैयो, ''हे हिमराज! थे जुगां-जुगां तांई म्हारै भारतभोम रा पोरैदार बण्योड़ा इयां ई गरब सूं ऊभा रैवो अर म्हारी धरती नैं जळ अर जीवण सूं हरी-भरी राखो। म्हे काची माटी रा मिनख थांरो करज नीं उतार सकां। थांरै कारणै ई म्हे हां। थांरो परताप सवायो हुवै।''

पहलगाम सूं उतराई में लिद्दर नदी सड़क रै सायरै कर इयां बैवै ही जाणै कोई भायली बातां करती सागै-सागै चालती होवै। दूर तांई लिद्दर आपरी कहाणी कैवती रैयी अर म्हे मून होय'र सुणता रैया। रास्तै में बादाम-अखरोट-खिरनी अर केसर खरीद्या। टाबरां वास्तै गरम कोट-जैकेट, दुसाला मोलाया अर भारी मन सूं पाछा बावड़्या।

बावड़ती जातरा मांय पहाड़, खाई, झरणा,नदी, रूंख हरियाळी अर बादळिया रूप पलट पलट'र साम्हीं आवै हा। बादळिया नूंवा-नुंवा, न्यारा-न्यारा रंग बदळै हा। आखी यात्रा में म्हनैं लागतो रैयो जाणै समूची घाटी बादळियां रो अेक रंगमंच है, जठै बै न्यारा-न्यारा रूप-रंग बदळ-बदळ'र नाटक करै। सगळी जातरा में म्हैं तो बादळां रा नाज-नखरा देख -देख'र खुसी सूं गैली हुवती रैयी, पण अबै घाटी उतरती बगत होळै-होळै बादळियां रो साथो छूटतो जाय रियो हो। मन अणमनो हो।

म्हैं मन ई मन बादळियां सूं कैयो, ''रे राम रा बंदां! कदैई आ जाया करो म्हारै ई देस। अठै थे अणूता ई बरस बरस'र गैला हुय रैया हो अर बठै म्हारी पूरी जूण ई थांरी उडीक मांय खपती जावै है। भूल्या भटका ई निगै कर लिया करो म्हारी। म्हे सगळा पलक पांवडा बिछाय'र बाट जोवां थारी। जरूर आया भलो!'' कैय'र म्हैं गाडी री सीट माथै सिर राख लियो अर आंख्यां मीच ली। दो टोपा आंसू म्हारी आंख्यां सूं ढुळकग्या।

◆◆

मनोहर सिंह राठौड़

नानीसा

हरेक टाबर रो, वीं री नानी घणो लाड राख्या करै। ''नानी रै अठै जावण दै, दही-बाटियो खावण दै'', आ झींटिया री कहाणी सुणतां-सुणतां आपां री केई पीढियां निसरगी। वै सगळा लोग कदे रा ई सुरग सिधायग्या, पण झींटिया री कहाणी बियां ई चालती आवै। टाबरां रा मन बिलमावै। नानाणा वास्तै कोड जगावै। मूळ सूं ब्याज प्यारो लाग्या करै। नानी नैं आपरो दोहितो-दोहिती लागै वैड़ो ओर कोई रिस्तो नीं लागै। नानी कहाणी सुणबा वास्तै भी याद आया करै। पण म्हारै साथै बात दूजै ढाळै ई बरतीजी।

म्हैं सदा म्हारा नानीसा नैं कहाण्यां सुणाई। म्हैं जद नानाणै गयोड़ो होंवतो, म्हनै सांझ री बगत अठी-उठी फिरतो देखतां पाण नानीसा कैवता, ''लैरै भाई, कहाणी सुणा। अै टाबर हरान करबा लागरया है।'' पछै कहाण्यां सरू होवती। नानीसा घणै नेठाव रा धणी हा। बैठ्या-बैठ्या सुण्यां जावता। जकी कहाणी वांनै आछी लागती वीं वास्तै फरमाइस कर काढता, ''अरै बा कहाणी सुणा!'' दूजी-तीजी वार सुण्यां भी वै इयां दरसावता जाणै आज पैली बार सुण रैया होवै। इण सूं सुणावण वाळा रो जोस बध्योड़ो रैवै। कहाण्यां रै बिचै-बिचै वै हूंकारा भी देंवता। ''अरे-है नीं, अरे थारी, आ बात हुई के?'' इयां कैयनै ठेगा लगावता। वांनै म्हैं कित्ती कहाण्यां सुणाय दी अर कित्ता जणां सूं वै कहाण्यां सुण चुक्या हा, इणरो लेखो नीं लिरीज सकै।

वांरै कनै बैठ्यां पछै बातां रा तार आपै ई सळसळावण लाग ज्याता। वै कोई मेळै-खेलै, गांव-गोठ, ब्याव-सगाई, आव-जात, हांसी-मसखरी री बात पोळाय देंवता। जैड़ो आदमी देखता, वीं रै

ठिकाणो :
421-ए, हनुवंत-ए
बी.जे.एस. कॉलोनी
जोधपुर (राज.)
मो. 9829202755

 ISSN : 2320-0995

हिसाब री बात छेड़ देता। पछै सगळा आप-आप रै हिसाब सूं बोल्यां जावता। सगळा हांस्या जावता। नानीसा सगळां सूं बेसी बात रो सुवाद लेता। खिलखिलाय हांसता। हांसी रै साथै वांरी आंख्यां सूं पाणी चाल ज्यातो। जकै नैं ओढणी रा पल्ला सूं पूंछ्यां जावता अर हांस्यां जावता। पण बात फोरी नीं पड़बा देंवता।

मोमाख्यां सैत री कूकड़ी रै आरै-सारै दोळ्यूं फिरयोड़ी रैवै जियां लुगायां-टाबरां रा झूमका नानीसा रै आसंग-पासंग बैठ्या रैवता। हांसी ठट्ठा चालता। बिचै-बिचै पाणी अर मोसम री जकी जिनस घर मै होंवती वीं री मान-मनवार, बैठ्या जका सगळां री हुया करती। बैठ्या रैवता जका वां रै निरमळ सभाव री चरचा आखै दिन करता।

वां रै घर साम्हीं कै वां रै देखतां-देखतां कोई टाबर, जे आखड़ नै पड़ग्यो होवै, सगळां सूं पैली नानीसा नेड़ै पूगता। देखता पाण जोर सूं बोलता, ''अरे, औ कीड़ी नै मार दी। ओ-हो ओ के करयो भाया!''

अत्ती सुण्यां टाबर आपरी पीड़ भूलनै धरती माथै मरयोड़ी कीड़ी सोधबा लागतो। टाबर संकतो, अरे आ तो गड़बड़ होयगी। अत्ती ताळ में नानीसा वठै पूगनै लाग्योड़ा घाव, छुल्योड़ी चामड़ी रै आडो हाथ लगाय लेंवता। पाणी सूं सावळ धोयनै हळदी-घी रो ग्याभणो फूवो त्यार करवाय नै बांध देंवता। पछै वीं टाबर नैं घरां पुगावता। टाबर हाथ में लियोड़ी गोळी कै नानीसा सूं लियोड़ा लाडू रा खेरा में मस्त होयोड़ो कीं आंसू टळकातो, हांसतो-टसकतो आधा दरद नैं भूल जावतो।

म्हारा नानीसा ओछी रास रा, गेंहुवै रंग रा अर पतळै हाथ-पगां वाळा हा। म्हैं जद सूं देख्या, वांरै मूंडै रै मामूली-सा सळ हा। जाबक-सा झुक नै चालता। पतळो मिनख दीखबा में पतळो जरूर दीखै, पण चाल में तरक-मरक करनै उतावळो ई होवै। बियां ई वै, चालण रो काम पड़्यां, साथै चालती जोध जवान बहुवां सूं लारै कदैई कोनी रैया। वां दिनां राजपूतां री लुगायां घरां सूं बारै कम ई निसरती। सावण रा बन सोमवार, अठी नै री लुहागर जी री फेरी, नवलगढ रो बाबा रामदेव रो मेळो, कै खेतां में, कै कोई रै अठै ब्यांव-सावै आपसरी में ढाण्यां-ढपाण्यां में ई जावणो होवतो। आई साल खेती री बगत लुगायां रो झूमको आप-आपरा खेतां री दो-चार बार फेरी जरूर देयनै आवतो। बस, अै ईज मौका हा जकां में अै लुगायां उपाळी बगती। बाकी आखी साल, घर भलो कै दो-चार घरां सांमलै चौक री हथाई।

म्हारा नानीसा कहाण्यां, किस्सा सुणबा रा सोखीन हा। बहुवां काम संभाळ राख्या हा। वै काम करबो करती। नानीसा री मैफिल जमी रैवती। कोई री बैन-बेटी पीहर आयोड़ी होवो, वा दोपारी में घणी बार म्हारा नानीसा कनै ई बैठी लाधती। नूंवी आयोड़ी बहू, रावळै में सगळा घरां री बूढी-बडेरयां रा पग दाबवणा, पगैलागणा री रीत-रिवाज वास्तै निसरयां करती। वीं नैं सगळां सूं बेसी बगत नानीसा रा चोक में ईज लाग्या करतो।

केई टाबर, बायां नूंवी बहू रै साथै ई बग्यां जावता। केई लुगायां, टाबर पैली सूं नानीसा रा चौक में बैठ्या उडीकता। सगळां नैं सावळ ठाह है कै अठै ई जमघट लागसी। बातां सुणबा, खिलका देखबा री गरज सूं वा जबरी उडीक होया करती।

आ उडीक निरफळ कोनी जाया करती। वठै पूग्यां, नानीसा रै पगैलागणा होवता। वै बहू नैं गळै लगाय लेंवता। वीं बगत वांरै मूंडै माथै आयोड़ी पळक, आंख्यां में अपणेस, चेहरै री रंगत ई सांतरी होवती। हदभांत खुसी वांरा डील सूं उफण-उफण बारै नीसरती। अैड़ा राजी होवता जाणै वांरा अेकाअेक बेटा री बहू आगणै में पैलीवार पगल्या मांड्या होवै। जद कै वांरी दोन्यूं बहुवां आयां बरस बीतग्या। पोता-पोती मोटा-मोटा फिरै लाग्या।

पछै नानीसा नुंई आयोड़ी बहू री मूंडो दिखाई री रीत री पालना करता। नेग लेंवता। आसीस देंवता। वै दूजी लुगायां री जियां मामूली घूंघटो ऊंचो करनै देखबाळा नीं हा। वै तो सावळ उघाड़नै निरखता। इण मौकै जे घणी लाजवाळी बहू, बेगी-सी मूंडो पाछो ढक लेंवती जद वै ओरूं घूंघटो उघाड़ता, ''भाई, हाल म्हनै सावळ कोनी दीस्यो। बूढी लुगाई री निजर है।'' इयां कैयनै खासा ताळ घूंघटो ऊंचो कर्‌यां राखता। औ ईज मौको होवतो जद भेळी होयोड़ी सगळी लुगायां आयोड़ी बहू नैं सावळ निरख-परख लेंवती। आ सावळ देखबा री मन में सगळ्यां रै ई होवती। आ मनस्या अठै पूरी होया करती।

जद कोई लुगाई बहू रा नाक-नक्स री टीका-टीपणी सरू करती, नानीसा बरज देंवत, ''देखो अे लुगायां! अै कपड़ै री कातरां करणै रो काम आप-आप रै घरां जायनै करो। अठै बस बहू देखो अर गीत गावो।'' पछै दो-चार गीतां रा सूंण होवता। वांरो कैवणो हो, ''आयोड़ी बहू नैं सावळ देख लेवै तो आं लुगायां सूं लारो छूटै। नीं जणां आवता-जावतां, कठैई मारग में मिल्यां, अै मूंडा उघाड़-उघाड़ देखसी। बापड़ी छोरी नैं हरान करसी। औ रबरबाटो मेट दियो।'' साच्याणी बहू रो लारो छूट ज्यातो। फेर भी अेक-दोय जणीं तो मारग में धक्यां, ''ल्यो भाई, नूंवी बीनणी रो मूंडो देखल्यां, जकै दिन भीड़ में सावळ कोनी देखीज्यो।'' इयां कैयनै ओरूं देखती।

अैड़ी लुगायां नैं नानीसा ओझाड़ता, ''क्यूं हरान करो हो लायण डावड़ी नैं। आपां रै अठै ई रैसी।'' इयां सुण्यां उण नूंवी बीनणी नैं लागतो कै साच्याणी अै दादीसा कत्ता सांतरा है। जकै दिन अत्ती ताळ घूंघटो ऊंचो राखणै रो मकसद ई ऊंचो हो। नूंवी बहू नैं पछै बात समझ पड़ती।

अेकर अेक जणो कोई नै पूछतो-पूछतो मांयनै आंगणै तक आयग्यो। दरवाजै सूं ई आवाज दीनी। नानीसा साम्हीं आयनै बोल्या, ''अरे ठेठ मांयनै कियां आयग्यो बेसरमा! बारै सूं ई पूछणो हो। बाको फाड़्यां मांयनै ई आय बड़्यो!''

वो जावतो-जावतो बोल्यो, ''दादीजी, बारै कोई दीख्यो कोनी। म्हैं तो थांरो टाबर ई हूं। म्हनै ठाह कोनी हो कै मांय कोनी आया करै।''

वीं बगत नानीसा उतावळा-सा बोल्या, ''सैटअप! बारै सूं ई पूछणो हो। वा अबै जा आघो।''

इण बात नैं हथाई री बगत, सिंझ्या नै हांसता-हांसता सगळां नैं बताई। म्हनै मौको मिलग्यो। म्हैं बोल्यो, ''अरे नानीसा! आपनैं तो अंगरेजी आवै। अब सूं म्हैं तो हाथ मिलास्यूं।'' जद पछै नानाणै आवतां अर पाछा वठै सूं जावतां नानीसा रै म्हैं धोक देयनै हाथ मिलाया करतो। ओ सदा वास्तै अेक मसखरी रो टोटको बणग्यो। अणपढ लुगाई रो सहज रूप सूं हाथ मिलावणो, पढी-लिख्यां नै आंतरै बिठावतो। वां में कित्ती जबरी ऊरमा अर समझ ही। म्हारो मन राखबा, कै टाबर राजी रैवै, वै इयां हाथ मिलावै लाग्या। वै नूंवी बातां नै अंगेजण में ई पैलै नंबर हा। वां सूं आखरी बगत हाथ मिलायनै आयो जद वै माथै हाथ फेरयो हो। वो वांरो सनेव रो हाथ, वांनै याद करता पाण म्हनै म्हारै माथै रै फेरीजतो आज भी लखावै।

वै म्हारा मा'सा सूं ई बेसी म्हारो लाड राखता। मा'सा आज वांरी वीं बगत री उमर में आयोड़ा बिराजै। वै आपरी अबखायां सूं काया होयोड़ा दो-चार बातां मुसकल सूं पूछै। म्हांनै ई अत्ती कमती बातां पूछै जद आया-गया दूजा लुगाई-टाबरां नैं तो घणां पूछबा रो कै बतळावण रो सोचणो ई बिरथा जाणो। जद लागै कै नानीसा कत्ता जीवट रा धणी हा। आपरी हारी-बेमारी, मन री उदासी नैं लोगां बिचै बैठनै भूल ज्यावता। आयोड़ा री दोगाचींती मेटबा, कोई हांसी-मसखरी री बात कैयनै धीजो बंधवाता। वांरै कनै आयोड़ो मिनख आपरी पीड़ भूलनै ई बावड़तो। कोई घरां में कदे मनमुटाव ई होय ज्यावतो। सासु-बहुवां रा न्यारा-भेळा होवण रा मामला ई बणता। कैया करै नीं कै दोय बासण होवै जका, कदै तो खड़कै ई। आ खड़बड़ मेटण री ठौड़ ई नानीसा रो चौक हो। घरां सूं रिसायनै आयोड़ी कै सासू री दबड़कायोड़ी-काढ्योड़ी बहू रो आसरो औ घर ईज हो। और लोग डरता, कै अैड़ै मौकै मदद करयां, आपां सूं गोधम होय ज्यावैलो। पण इण बाबत नानीसा कदैई नीं डरया। वांरी टणकाई चालगी। जकै नैं कीं समझावणी रै मिस कैय दियो, वो पलट नै पाछो कीं नीं कैयो।

अैड़ै मोकै वै वीं बीनणी री सासू नैं साम्हीं धक्यां ओझाड़ देंवता, ''अे तूं घणी बडी आदमण बणगी के? काल म्हारै साम्हीं आई ही। ईं बापड़ी पराया घर सूं आयोड़ी छोरी नैं क्यूं हरान करै? काल आ भी सासू बणसी। जा लेयज्या बहू नैं हाथ पकड़नै। अैड़ा खड़बड़ाट रा काम चोखा नीं हुवै। बारै मिनखां में घर री इज्जत थोड़ी ई उछाळीजै। भली आदमण, थारै सुसरा रो सगळै नांव हो। थे अैड़ी आयगी जको घर री इज्जत गुवाड़ में खिंडावै लागी।''

अत्तो सुण्यां पछै वा सासू, आपरी बहू नैं साथे लेयनै चुपचाप चली जावती। बहू रै ई रीस रो आफरो कम होयां, बात सावळ समझ में आय ज्याती। पाछो घर बियां ई चालबा लागतो। सगळां नैं सावळ ठाह हो कै आं रै पेटै पाप कोयनी। जकी बात रो ठाह पड़तो, वै वीं रो खुलासो कर काढता। मन-मन में घोळ मथोळ राखबा री ठौड़ सीधी-सट्ट बात नैं मूंडै ऊपर फटकार दिया करता। कोई भलो मानो, भलांई बुरो। बुरो कोई रो चावता कोनी। इण वास्तै वां सूं बैर-बिरोध कोई रो ई कोनी हो। वांरी बात रो बुरो कोई कदैई कोनी मान्यो। चुगलखोर, घर फुड़ावणवाळी लुगायां वांसूं सदा अळघी ई रैयी। वै जकी बात रो ठाह पड़्यो, वीं नै अगला धणी सूं जरूर पूछता। इण वास्तै सगळा जणां वांरै आगै झूठ-साच करबा में डरचा करता।

वै सगळां रा हा। सगळा वांरा हा। वांरै हाथ में कोई लांवणो, परसाद आवतां ई बांट-चूंटनै वीं बगत ई पूरो हिसाब करता। उधार, घरै पधार री आदत ही। वीं बगत वांरै कनै घर रो होवो, भलांई बारै रो। वांनै तो आयोड़ी जिनस बांटण सूं मतलब हो। पछै कोई घर रो टाबर कैवतो कै म्हनै लाडू कोनी दियो। वै सीधी बात समझावता, ''बेटा उण बगत थूं कनै कोनी हो। नीं जणां म्हारा लाडला बेटा नैं पैली देंवती। अब काल कोई लावणो आसी, वो थनै देऊं। थूं म्हारै कनै ई बैठ्यो रैयी।''

वां दिनां कपड़ा सींवण री मसीनां छोटा गांवां में कोनी पूगी ही। सिंवाई रा काम स्हैरां में होया करता। जकै रै दोय पईसा हाथ में हा, वै तो सिंवाय लेंवता। गरीब गुरबा अठी-उठी सूं तजबीज बैठाता। नानीसा हाथ रा चतर हा। हाथ सूं टांको, मसीन री जियां बरोबर आवतो। कीं दया भाव ई घणो हो। आळस वांरै पाड़ोस्यां रै ई नीं हो। इण वास्तै अेक-दो कुड़ता सींवणा, वां रै छाबड़्यां में पड़्या ई रैवता। छाबड़ियो ई सुई-डोरा, कपड़ो-कतरणी, कपड़ै री कातरां रो खजानो हो। सावळ सींयां पछै बटण लगावता। कपड़ै री गोळी बणाय, ऊपर कपड़ो लपेटनै बटण बणाय देंवता। इण काम सारू गांव रा गरीब-गुरबा छोरा-मोट्यार आयनै दादीजी री गरजां करता, ''दादीजी, उघाड़ो फिरूं। कुड़त्यो फाटग्यो। सींव नै देवो नीं।''

आपरी इण गरज सूं वै आया गया मिनख, नानीसा रै खेत में छोटो-मोटो काम कर देंवता। भैंस-गाय सारू भरोटी लियाता। ओढायाड़ो बजार रो दूजो काम भी कर देंवता। ''ल्यो दादीजी, पग दाबद्यूं...'' इयां कैयनै केई लुगायां आपरी सिंवाई करवायनै लेय ज्यावती। औ सिलसिलो बारूंमास चालतो। कदै कोई सारै बैठी लुगाई टोकती, ''थे कांई रोजीनां ई जुळ-जुळ करनै सिंवाई करता रैवो हो। कदे तो आराम लिया करो। इयां बेगी ई आंख्यां देय बैठस्यो।''

आं बातां नैं सुण्यां, झूंझळ में आयनै वै आपरो हाथ रोक लेंवता। छाबड़ियो अेक पसवाड़ै सिरका देंवता। थोड़ी जेज में वो छोरो बिना कमीज रै उघाड़ो वांरी आंख्यां आगै

घूमबा लाग ज्यातो। बातां रै बिचै वांरै हाथ में हळवां-सी कद वो अधखलो सिंवीजतो कुड़तो आय ज्यातो, वांनै खुद नैं ई ठाह नीं पड़तो। कोई सरदी मरतो चेहरो वांनै चेतै आवतो। कोई गांव-गोठ सारू महीनां पैली ई कपड़ो दियोड़ो राखतो। वै सगळां री भावनावां समझता। कियां-जियां सगळां रा हिसाब बिठावता। पछै मसीनां आयगी। कोई मोल लियायो। कोई रै ब्यांव में आयगी। मसीनां गिणती री ई ही। जकै में गरीबां री कुण सुणै? आं सगळां रो आसरो नानीसा ईज हा। वै जीया जत्तै, इण काम नैं करता रैया। पछै हांण हटग्या। हाड-गोडा सफा जबाब देयग्या। वीं बगत ई अेक-दोय जणां तो वांरै कनै कपड़ो छोड्योड़ो राखता, ''दादीजी होळै-होळै सिंवाई करनै देय दीज्यो। म्हारै उंतावळ कोनी।'' वै सुरग सिधाया जकै दिन भी वांरा छाबड़िया में अेक कमीज सींवणो पड़्यो ई हो। वांरै सुरग सिधायां पछै वो छाबड़ियो खाली होयनै बाड़ै में बगाईजग्यो। केई दिनां पछै वो छाबड़ियो देख्यां म्हनै आज रा स्वारथी संसार री ठौड़ वांरी लगन, मैणत, अपणेस, मदद अर दया भाव चेतै आयग्यो।

होळी-दिवाळी, वार-तिंवार, जलम आठम, गोगा नोमी, सरद पून्यूं जैड़ा घणाई तिंवारां रै मोकै आयोड़ा टाबर कै मिनख नै मूंडो अैंठ्यो जरूर करवाता। वांरै कनै पूंजी कीं ई कोनी ही। दाळ-रोटी मजै री ही। भेळो करणो जाणता कोनी। बगत माथै पईसो कोई रै काम आय ज्यावै, जकै नैं मोटो मानता। कोई रै भात-छूछक, बेटी रा सगाई-ब्यांव जैड़ा मौकां में आपरी जिम्मेवारी माथै पईसां रो बंदोबस्त कर देंवता। पईसा मोड़ा-बेगा पूग ई ज्यावता, पण जकी लुगाई मदद मांगबा आयगी वीं रो काम अटक्यो नीं रैवण दियो। आगलै री बेटी नैं टीबड़ी चढावण में सुख-संतोस सदा ई मान्यो।

नानीसा 90-95 बरसां रा होयग्या जद ताणी वांरा दांत छोटा-छोटा इकसार, धोळा धप्प फूटरा हा। केई कैवता कै दादीजी रै अै दांत दूजा आया है। दांत अैड़ा हा कै चिणां चाबल्यो भलांई। आज तीसी पूग्योड़ा, मोट्यारां रा पीळा-पीळा, डोडा-बांका, छीदा दांतां नैं देख्यां लागै कै आज वै नानीसा जींवता होंवता तो पेप्सोडेंट कै कोई दूजी कंपनी आपरा प्रचार, विग्यापन सारू वांरै दांतां री फोटू, बुरस करता थकां खेंचनै लेय ज्याती। वै सदा राख री चूंटी कै बाळू रेत नैं दांतां रै रगड़ी अर स्याफ। खास बात आ ही कै हाजमो चोखो हो। इण सूं जीभ-होठ लाल अर दांत मोत्यां जैड़ा सफेद सदा ई रैया। मूंडो अर चेहरो पूंछबा नै ओढणियै रो पल्लो हो।

जद कोई नैं रोटी परोसता, आपरै ओढणियै रो पल्लो थाळी पूंछबा नै काम लेंवता। स्याफ थाळी नैं ई वै पूंछणो नीं भूलता। इणमें वांरो अपणेस परगटीजतो। घर रा मिनख कै आयोड़ा पांवणां री रोट्यां सावळ सज ज्यावै, वो सावळ जीम लेवै इण सारू बै बरोबर निगह राखता। खुद वास्तै जे साग कोई दिन नीं बच्यो तो मिरच-धणिया, छाछ में बांटनै छाछ-राबड़ी रै स्हारै सूं जीम लिया। मन में हरखीजता कै, आज म्हांटो साग घणो सुवाद

हो। सगळा जणां गैरो-गैरो जीमग्या। अत्ता संतोसी मिनखां री तो आज कहाण्यां ई बणगी।

म्हारा नानोसा नाड़ी-बैद हा। देसी दवायां दिया करता। वांरी बतायोड़ी दवायां नैं कूट-पीट कपड़छाण करणो नानीसा रै जिम्मै ई हो। अत्ती बेगार-दूजां वास्तै मुफ्त में करता थकां ई कदैई नाक में सळ नीं घाल्यो। नानोसा नैं पांच-दस मिनट लागती, दवायां बताय जावता। वां दवायां नैं सुकावणी। पछै कूट नै कपड़छाण करणै रो काम नानीसा घणी सावचेती सूं करता। इण काम में दो-चार घंटा लागता। कोई जणो झाड़ा-मंतर सारू आय ज्यातो। आयोड़ा नै बिठाणो। पाणी वास्तै पूछणो, अै सगळी जिम्मेवारियां नानीसा री।

वांनै खुद नैं खासा घासा-गळूंठी याद हा। कोई टाबर री मां कै बडोड़ा आपरी अबखाई सारू आयनै बतांवता। अै जीभ हेटै ई नुस्खा त्यार राखता। वीं बगत ई बताय देंवता कै इयां-इयां करनै घासो देय दीजै। वांरी साची जबान नैं जस हो। जको ई कीं बताय दियो वो ई पुख्ता असर करग्यो समझो।

वै पूरी हिम्मतवाळी रजपूताणी हा। अेकर गांव में लाय लागगी। वीं बगत ताणी आखै गांव में अेक गोगाजी री मैड़ी पक्की बण्योड़ी ही अर अेक बडो कमरो नानीसा रै ई पक्को हो। आं दोनुवां नैं छूट आखै गांव रा काचा टापरा, छान-छपरियां सूं छायोड़ा हा। लाय सूं बचावण नै जकां रै कनै कीं घणमोलो सामान, पेट्यां-पेवट्यां ही, वै ल्याय-ल्याल नानीसा रै अठै छात तांणी कमरै नैं भर दियो। बाकी रा लोग लाय बुझावै हा। आखै गांव रा छान-छपरियां री लपटां ऊंची ऊठगी। केई जणां रा टाट-बकरिया बंध्या-बंध्या बळग्या। मामूली बासत्यो री झळ सूं अेक घर भी अछूतो नीं रैयो।

इण मौकै हुंस्यार मिनख कूवा जोड़ दिया। पाणी भर-भर बासत्यो में बगाईज्यो। नानीसा सगळां रो सामान रखवायो। अेक-दो लुगायां उण विणास लीला सूं बेखळखातै होयगी, वांनै धीजो बंधवायो। राजी-राजी समझाय पछै फटकारनै चुप कराई। लाय बुझ्यां पछै रात री बगत जकां रो सो-कीं बळग्यो, वांरै वास्तै केई घरां में खीचड़ा, खीचड़ी, राबड़ी, साग-रोट्यां बणवायनै जिमाया। केइयां रै अठै रोट्यां भिजवाई। थ्यावस बंधवाई। आ व्यवस्था वै दो-चार दिनां ताणी करी। आपरी गायां-भैंस्यां रो दूध, केई दिनां ताणी सो क्यूं लुटायोड़ा गरीब घरां रा टाबरां वास्तै देंवता रैया। पछै पाछा छान-छपरिया बंधवावण में जकां रै कनै सांवठा पूळा हा, वै दिरावण में नानोसा साथै नानीसा ई मदद करी। केई मुफ्त में पूळा दिया, केई जणा सूं पईसां साटै लिया। औ काम पाछो ढबसर जम्यां पछै गांव री गुवाड़ में वै लोग बतळाता कै धिन है ईं छत्राणी नैं। आ आपरी मां रै अेक ई जलमी। इण महाविणास में जबरी मदद करी। अैड़ै मोकै कई मोट्यारां जीभ बगाय दी। पण आ लुगाई होयनै मरदां सूं बेसी बाजी मार ली। आ कथा बरसां बरस चाली। जद पछै नानीसा

आसंग-पासंग रा गांवां में पूजनीक बणग्या। केई जणा तो देवी रो रूप समझनै इणां रै दरसणां सारू ई आया। गांवां में अफवावां फैल ज्यावै। कीं वा बात ई होई।

इणसूं ई सवाई मरदानगी रो मौको अेकर औरूं आयो। सियाळै रा दिन हा। नानोसा गांवतरो करबा गायोड़ा हा। वां दिनां चोर-डाकुआं रो जबरो जोर बध्योड़ो हो। पांच-सात आदमी आयनै उण कड़कड़ाती डांफर मांय दो-चार आदम्यां नैं बंदूक रा जोर सूं डरायनै बांधग्या। पछै घर नै सावळ लूट लियो। सरदी में आखो गांव सूतो रैयग्यो। इण घटना रो हाको फूट्योड़ो हो। आखै दिन इण री चरचा होवती। बीं रात कोई सांसर-ढांढां रै दड़बड़ाट सूं गांव में जाग होयगी। सगळा चौकन्ना हा। केई जणा डरता रजायां ओढली। नानीसा ऊंचा कमरा माथै नानोसा री पिस्तोल लेयनै चढग्या। मामोसा नौकरयां में हा। ठंडी ठारी चढती रात में आधो गांव सूतो हो। आप-आपरी गवाड़्यां में जागतोड़ा सावचेत हा। नानीसा ढळती रात ताणी अेकला छात माथै बैठ्या रैया। पछै जायनै तड़काऊ रा सोया।

दिनूगै लोगां पूछी, ''दादीजी, धाड़ेती आज्याता जद के करता?''

नानीसा दड़ूक्या, ''करबा नै के हो, अेक-दोय नैं ढाय देंवती। पिस्तोल में कारतूस छः हा। अत्तो होयां पांच-सात मोट्यारां रा ई पग उपड़ ज्याता।''

इण हादसै पछै नानीसा गांव रा झांसी रा राणी ई बणग्या। केई दिनां ताणी बातां अर वांसूं मिलबा आवणो चालतो रैयो। जातरा सूं नानोसा आयनै कैयो, ''अैड़ी गैलाई नीं करणी ही। काल नै साच्याणी कीं घटना होय ज्याती तो... ? थे लुगाई री जात हा।''

नानीसा चटकै ई पड़ूतर दियो, ''लुगाई होवो भलाई मरद, मरणो तो अेकर रो है।''

आखी उमर दूजां वास्तै आपरी जिंदगाणी नै काम लेबाळा मिनख अब कहाण्यां-किस्सां में लाधै। म्हैं सांतरी किस्मत रो हूं जको अैड़ा म्हारा नानीसा हा। वांरी गोदी में म्हैं खेल्यो। वै नानी होयनै कहाणी कैवण री लकब नीं जाणता। म्हैं वांनै कहाण्यां सुणाया करतो। म्हारो मोटो भाग कै आज म्हैं वांरी कथा आपरै सामै परगटी हूं। साचा अवतारी सिद्ध पुरख तो देखबा में कोनी आया। म्हारै वास्तै तो वै अवतारी ईज हा। जद-कद याद करूं दूबळी काया रा, मुधरा-सा, लिलाड़ री चामड़ी में सळ पड़्योड़ा वै म्हारै साम्हीं आय ऊभै। वांरा बकरी जिस्या छोटा-छोटा धोळा दांत, लाल होठां रै बिचै सूं हांसता हरख रो समदर लहराय देवै। मिनख यादां में जींवतो रैवै जद आंतरै कठै गयो? वै अठैई कठै होवैला, अैड़ो म्हनै लखावै। औ म्हारो पक्को बिस्वास है।

◆◆

कूंत

डॉ. फतेहसिंह भाटी

'नेव निवाळी' सूं पड़तो नारी मन री पीड़ रो परनाळो

किरण राजपुरोहित 'नितिला' बहुमुखी प्रतिभा री धनी है। बै जित्ती सहजता सूं हिंदी मांय लिखै, बित्ती ई सहजता सूं मायड़ भासा राजस्थानी में ई रचै। कहाणियां अर कवितावां टाळ उणां रै बणायोड़ा रेखाचित्राम हंस, पाखी, मधुमती, अहा जिंदगी जैड़ी ख्यातनांव पत्रिकावां मांय छपता ई रैवै। वांरी आंगळ्यां सितार रा तारां माथै जित्ती रफ्तार सूं रमै बित्ती ई चतराई सूं रंगां अर ब्रुस रै सागै भी। उणां कीं बगत पैली ई शॉर्ट मूवी मांय उटीपा अभिनय सूं अेक नवी सरुआत ई करी है।

'नितिला' जी रै नवै राजस्थानी कहाणी-संग्रै 'नेव निवाळी' मांय कथा, सिल्प अर भासा री बणगट अर पठनीयता तो उम्दा है ईज, पण कीं कहाणियां मांय नवा प्रयोग ई करीज्या है। राजस्थानी में जे इण भांत रा नवा प्रयोग व्हिया ई है तो साव थोड़ा।

पीड़ रै बिना सिरजण व्है ईज नीं सकै। परकत जद सिरजण रो काम नारी नैं सूंप्यो तो हरेक महीनै रा कीं दिना में पीड़ भोगणी ई उणरै हिस्सै लिखीजी। पण इण पीड़ नैं ई वा पीड़ नीं समझै। पीड़ा इण बात री है कै अेक अबोध छोरी अचाणचक पीड़ सूं कुरळावै, उण रा गाभा रगत सूं भीज जावै, मन मांय अलेखूं संकावां न्यारी उठै कै ठाह नीं उणसूं कांई गुनो व्हैयग्यो है! अबै वा आपरै माईतां अर बैन-भायां सूं कांई कैवैला? तन अर मन दोनूं सूं घावळी उण भोळीढाळी किसोरी री मनगत नैं कहाणी 'काचा कंवळा' मांय लेखिका घणै सांतरै ढंग सूं उकेरी है तो कहाणी 'रतन दीवां म्हैल' मांय वै कैवै कै भलांई करोड़ां लोगां रै बिचाळै

ठिकाणो :
351, मोहन नगर बी
बी.जे.अेस. कॉलोनी,
जोधपुर-342011
मो. 9414127176

 ISSN : 2320-0995

कित्ती ई चिंतावां व्हो, पण नारी रै जीवण रो हरेक सुख हरेक दुख अेक ईज मिनख रै खंवै सूं जुड़्योड़ो व्है। वा है तो जीवण रा सगळा रंग है, उणरै नीं व्हियां जीवण ई बिरंगो है, स्याह है, साव सूनो है।

ठीक इणीज भांत लुगाई री पीड़ 'बरंगो तावड़ो' कहाणी ई बयान करै। इण मांय लेखिका लिखै कै टाबर जिणणो समाज रो मूंडो बंद राखण सारू जरूरी है तो खुद नैं 'बिजी' राखण रो जरियो भी। कोई कित्ती ई आधुनिक क्यूं नीं बणै, पण मातृत्व रो तोड़ो मांय रो मांय उणनैं कठैई सालतो रैवै, कुंठां सूं भरै, बेचैन करै। कहाणी 'सीली-संद जमीं' मांय लेखिका लुगाई रै सुख अर दुख दोनूं रो जिकरो करै। आदमी कित्तो ई सिमरथवान व्हो, उण रा मकान ई अेक सूं बेसी व्है सकै पण घर अेक ईज व्हिया करै। औ सौभाग फगत लुगाई नैं ईज है कै उण रा दो घर व्है सकै। हालांकै औ उणरो सौभाग है, पण इण सौभाग अर साधना रै उपरांत ई घणकरी अभागणां रै अेक घर ई पांती नीं आवै।

'तिरसी नेव' अेक कहाणी मांय दो कहाणी समेट्योड़ी है। इण कहाणी रो विसय अैड़ो है जिण माथै इण पोथी रै लोकारपण रै टाणै मधु आचार्य 'आशावादी' कैयो कै इण कहाणी माथै उपन्यास लिखीजण री पूरी संभावना है। म्हैं ई वांरी इण बात सूं सहमत हूं। प्रेम अर देह री पीड़ दोनूं विसय सईकां सूं मिनखाजात सूं जुड़्योड़ा है। आपां रै आंख्यां बंद करण सूं अबखायां सुळझै नीं अपूठी वत्ती उळझै। फेरूं ई समाज कै पाठकां री प्रतिक्रिया सूं बचण खातर घणकरा लेखक इण कहाणी मांय लिख्योड़ी दैहिक पीड़ नैं लिखण सूं कन्नी काटै।

सौभाग सूं इण पोथी रै छपण सूं पैली आ कहाणी बांचण रो मौको मिल्यो हो अर म्हैं औ विसय किरण जी रै साम्हीं राख्यो हो कै इण कहाणी माथै करड़ी प्रतिक्रिया व्है सकै! औ ई व्है सकै कै पाठक सिरै सूं ई इण तरै रै विमर्स नैं 'रिजेक्ट' कर देवै। फेरूं ई अेक महिला लेखक सामरथ जुटायो अर इणी कहाणी नैं पोथी मांय ठौड़ देवण री 'रिस्क' ली। आ वांरी लेखण-धरम पेटै निस्ठा ईज मानो। म्हारै खयाल सूं आ कहाणी 'राजस्थानी कहाणी' रै बदळाव मांय मील रो पत्थर बणसी, उणनैं अेक नवी दिसा देवैला।

आ कहाणी जठै देह-सुख रै चरम नैं उकेरै, वठै ई प्रेम रै चरम नैं ई परिभासित करै। प्रेम, नीं तो हासल करण रो नांव है अर नीं गमावण रो। वा तो फगत आपरै प्रेमी नैं सुख सूं भर देवण री चावना है। उणरो सुख उणनैं छोड देवण मांय है तो थे वीतरागी बणनै उणनै मुगत करता थकां सिरक जावो। जे उणरो सुख थांसूं अेकमेक व्है जावण मांय है तो थे थांरो सगळो बुद्धत्व, आपरी आखी रिधियां-सिधियां, आपरी आवगी अद्‌भुत सगत्यां छोड'र ई बावड़ आवो, औ ईज प्रेम है।

आपरी कहाणियां मांय लेखिका फगत लुगाई रै मन री पीड़ ईज नीं उकेरी। राजस्थान मांय कच्चा घर कीकर बणता हा, वांरी खासियतां सूं लेयनै मकान सूं घर बणण री प्रक्रिया आपनैं 'चांदा ऊपर कणी' कहाणी मांय देखण नै मिलसी। 'उधड़्यो चंदोवा' मांय छात, आभै अर ओळुंवां री पगडांड्यां मांय भटकता दो जात्री मिलैला तो सोशल मीडिया अर जनरेशन गेप सूं ई वांनै सरोकार है। सोशल मीडिया री लत किणी नसै सूं ई घणी भूंडी है। खास करनै किणी लुगाई अर आदमी रै बिचाळै मैसेंजर माथै होवण वाळी चैट। बगत रै साथै अेकांयत रा खिणां मांय कीं अैड़ी उणमादी बातां होवण लागै कै चावतां थकां ई उणसूं छूटणो दोरो व्है जावै। अैड़ी लत सूं सैकड़ां घर बरबाद व्हिया है। 'थळगट मत डाक आगळ' मांय किरण राजपुरोहित कैवै कै समझदारी इणमें ईज है कै आगळ मतळब कै लिछमण-रेख नीं लांघणी चाईजै। आजकाल हरेक अखबार, पत्रिका, स्पीकर पेरेंटिंग रा गुर सिखावै। औ ई सिखावै कै टाबरां सूं किण तरै वैवार करणो चाईजै। पण आ कोई नीं बतावै कै टाबरां नैं किण तरै वैवार करणो चाईजै। जनरेशन गेप री आ पीड़ 'सरकती व्हैल' मांय प्रगट व्है। इणी भांत मूंघा व्हैता इलाज, सरकार सूं ठगीजता करसा अर गरीब री व्यथा कहाणी 'खिरता लेव' मांय है।

'नेव निवाळी' मतळब कै कच्चा घर री छात रो वौ हिस्सो जठै सूं बिरखा रो पाणी पड़ै। नाम रै परवाण हरेक कहाणी घर-परिवार सूं मेळ करावै अर उण मांय रसियो-बसियो प्रेम, करुणा, पीड़ आंख्यां नैं ठीक वियां ई बरसावै।

◆◆

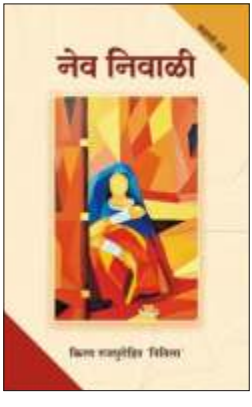

पोथी : नेव निवाळी
विधा : कहाणी-संग्रै
कहाणीकार : किरण राजपुरोहित 'नितिला'
संस्करण : 2020
प्रकाशक : सूर्य प्रकाशन मंदिर, बीकानेर
पाना : 120
मोल : 250 रुपिया

ISSN : 2320-0995

राजस्थली, जनवरी-मार्च 2021 (अंक : 150) रजि. नं. 31319/77 ISSN : 2320-0995

भाषा, साहित्य एवं लोक संस्कृति में
निरन्तर 60 वर्ष की सेवा पर
मरुदेश संस्थान, सुजानगढ़ द्वारा संस्था को
कन्हैयालाल सेठिया राजस्थानी भाषा सेवा सम्मान
अर्पित किया गया।

महावीर माली, राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ (राज.)
खातर महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ में छपी

राजस्थली लेन-देन सारु :
खाता नांव : RAJASTHALI
बैंक : बैंक ऑफ इंडिया, श्रीडूँगरगढ़
खाता सं. : 746210110001995
IFSC : BKID 0007462

Website : http://rbhpsdungargarh.com